हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 20 जुलाई, 2025

11 शहर का पॉश इलाका सेक्टर 23 भी मूलभूत सुविधाओं ...

12 भिवानी का रेलवे स्टेशन स्वर्गीय चौधरी बंसीलाल ...

डॉ. पीयूष जोशी
MBBS, DMRT, DNB
(Radiation Oncology)
13+ वर्षों का अनुभव
MK हॉस्पिटल भिवानी
डॉ. पीयूष जोशी का हार्दिक स्वागत करता है।
डॉ. जोशी, MK हॉस्पिटल में रेडिएशन ऑन्कोलॉजी विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवाएं देंगे।
पूर्व अनुभव :- G. Kuppuswamy Naidu Memorial Hospital, Coimbatore - Assistant Medical Officer | GKNM Hospital, Coimbatore - Associate Consultant, Dept. of Oncology (VNCC)
आयुष्मान पैनल पर फ्री इलाज उपलब्ध*
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध
NABH मान्यता प्राप्त अस्पताल
एम्बुलेंस/आपातकालीन सहायता के लिए संपर्क करें:
70 09 09 0924
MK Hospital
5th Mile Stone, Bhiwani - Delhi Road, Bhiwani, Haryana
TPA और कैशलेस सुविधा उपलब्ध

खबर संक्षेप

रोडवेज कर्मचारी ने खोया फोन मालिक को लौटाया

लोहारू। रोडवेज बस स्टैंड पर लावारिस हालत में मिले मोबाइल को रोडवेज कर्मचारियों ने उसके मालिक तक पहुंचाकर ईमानदारी का परिचय दिया है। राजस्थान के पिलोद निवासी बजरंग लाल लोहारू से देवराला जा रहे थे तथा इस दौरान उनका मोबाइल बस स्टैंड परिसर में ही गिर गया। यह मोबाइल रोडवेज कर्मचारी रमेश लांबा को मिल गया। उधर बस यात्री बजरंग लाल ने जब देवराला पहुंचकर अपनी जेब टटोली तो जेब से उसका मोबाइल फोन गायब था। जब वापसी में बस यात्री बजरंग लाल ने लोहारू बस स्टैंड पर अपने मोबाइल के बारे में पूछताछ की तो ड्यूटी पर तैनात रोडवेज कर्मचारियों डीआई संजय कुमार ने तसल्ली के बाद वह मोबाइल फोन मालिक को लौटा दिया। बजरंग लाल ने मोबाइल मिलने के बाद खुशी जाहिर करते हुए रोडवेज कर्मचारियों का आभार प्रकट किया।

आदर्श स्कूल के 10 बच्चों ने कराटे में जीते मेडल

भिवानी। धारेडू के आदर्श हाई स्कूल के बच्चों ने हिसार जिले के हांसी में आयोजित ओपन नेशनल कराटे चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन कर अनेक मेडल जीते, जिसमें चेतना और रौनक ने रजत मेडल, रोहित, अंकित, निशांत, सागर, रोहन, गर्वित, वंश कुमार व मयंक ने कांस्य पदक प्राप्त किए। इस उपलब्धि पर विद्यालय निदेशक डीवी भारद्वाज ने सभी बच्चों, अभिभावकों व कोच को बधाई दी। उन्होंने कहा कि ये परिणाम बच्चों व कोच सिद्धार्थ व विनोद कुमार की कड़ी मेहनत का परिणाम है। बच्चों की सफलता पर विद्यालय के प्राचार्य अशोक परमार ने कहा कि हमें अपने बच्चों की उपलब्धि पर बहुत गर्व है, ये उनके कड़ी मेहनत एवं समर्पण का परिणाम है। निदेशक भारद्वाज ने सभी बच्चों व उनके अभिभावकों का विद्यालय की तरफ से मुंह मीठा करवाया तथा बच्चों के उज्वल भविष्य की कामना की।

जलभराव से प्रेमनगर के ग्रामीणों का हुआ जीना मुहाल

गंदगी और मच्छरों से महामारी फैलने की आशंका, लोग सहमे

भिवानी। गांव प्रेमनगर में की बस्ती और मुख्य मार्ग पर स्थित स्कूल परिसर व उसके बाहर जमा बरसाती पानी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

पिछले कई दिनों से जलभराव की समस्या से जूझ रहे गांव प्रेमनगर के हालात दिन-प्रतिदिन बदतर होते जा रहे है और ग्रामीणों का जीवन पूरी तरह से प्रभावित हो चुका हैं। खेत, रास्ते और गलियों में लबालब पानी भरा हैं। जलभराव के कारण किसानों की 200 एकड़ से अधिक खड़ी फसल नष्ट हो गई है। आये दिन घरों में सांप घुसने के कारण लोग भयभीत है। यही नहीं मच्छरों एवं गंदगी की भरमार होने के कारण महामारी फैलने की भी अंदेशा बना हुआ हैं। वहीं गांव की बाहरी बस्ती में 20-25 मकानों को भारी नुकसान भी हुआ है।

कुछ दिन पूर्व ही उपायुक्त साहिल गुप्ता ने गांव प्रेमनगर में जलभराव की स्थिति देखते हुए मौके पर ही संबंधित अधिकारियों को तुंरत जल निकासी के आदेश दिए थे, लेकिन संबंधित विभाग ने जल निकासी के जो प्रबंध किए, वो नाकाफी है और अब स्थिति गंभीर बनती जा रही है। गांव में जलभराव के हालात इस कदर बिगड़ चुके है कि गांव के रास्ते व गलियां नदी व समुद्र में टापू की तरह दिख रहे है। गांव की फिरनी, खेल के मैदान और स्कूल तालाब बन चुके है। गांव की मुख्य सड़क और खेतों में दो-दो फुट तक पानी खड़ा है। कई जगहों से गांव का संपर्क भी टूट चुका है और पानी की सप्लाई भी प्रभावित हो चुकी है। गांव प्रेमनगर ने चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय के लिए 131 एकड़ जमीन फ्री में हरियाणा सरकार को दी है, इसके बावजूद भी गांव के लोग विभिन्न समस्याओं से जूझ रहे है। गांव को आदर्श गांव बनाना तो दूर जलभराव ने लोगों का जीना मुहाल कर दिया है। तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने गांव के विकास के लिए अनेक घोषणाएं की थी, लेकिन उन घोषणाओं को आज तक अमलीजामा नहीं पहनाया गया।

टापू बना गांव

ग्राम विकास एवं शिक्षा समिति के महासचिव रमेश बूरा ने कहा कि गांव प्रेमनगर में चारों तरफ जलभराव हैं और पूरा गांव समुंद्र में टापू की तरह नजर आ रहा है। पानी की वजह से ग्रामीणों जीवन पूरी तरह से प्रभावित हो चुका है। वहीं इस दौरान गांव में किसी व्यक्ति की मौत हो जाए तो उसके अंतिम संस्कार के लिए बड़ा संकट खड़ा हो जाएगा, क्योंकि गांव के शमशाम घाट व अन्य स्थानों पर पानी ही पानी हैं। उन्होंने जिला प्रशासन से मांग की कि वे गांव के बिगड़ते हालातों की जल्द से जल्द सूध लें।

पूरा गांव जलमग्न, कई जगहों से गांव का संपर्क टूटा

गांव के सरपंच राजेश बूरा ने कहा कि पूरा गांव जलमग्न हो चुका है, कई जगहों से गांव का संपर्क टूट चुका है। उन्होंने कहा कि गांव प्रेमनगर ने चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय के लिए 131 एकड़ भूमि फ्री में दे रखी हैं, इसके बावजूद भी गांव अनेक सुविधाओं से वंचित है। गांव के विकास के लिए हरियाणा सरकार ने अनेक घोषणाएं की थी, लेकिन वे अब तक पूरी नहीं की गई, जिसकारण ग्रामीणों में रोष पनप रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि शीघ्र जलभराव से मुक्ति नहीं दिलवाई तो किसी भी समय ग्रामीणों का गुस्सा फूट सकता है, जिसकी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

बरसात के पानी ने मचाई तबाही, 100 एकड़ से अधिक में खड़ी फसलों को भारी नुकसान

बवानीखेड़ा। जमालपुर मार्ग पर लगभग 100 एकड़ में खड़ी फसलों में बरसाती पानी खड़ा होने से इनके खत्म होने का डर किसानों को सता रहा है। वहीं किसानों ने फसलों की भरपाई के लिए सरकार से मुआवजे की मांग की है। कस्बे के जमालपुर मार्ग पर लगभग 100 एकड़ में खड़ी फसलें जिनमें नरमा, कपास, बाजरा, मूंग, ज्वार आदि की फसलों में बरसात का पानी जमा है जिसके चलते फसलों के नष्ट होने का खतरा बना हुआ है। वही किसान श्याम, कृष्ण, नरेंद्र, सुरेश, यश, राम सिंह, देवदत्त, संदीप, राजेश आदि ने बताया कि उनके क्षेत्र में खड़ी फसलों में बरसात का पानी जमा है। पानी निकासी नहीं होने के चलते उनके फैसले गल कर खत्म होने लगी है। वहीं किसानों ने प्रशासन से मांग की है कि उनकी फसलों की जांच करके उन्हें मुआवजा दिया जाए। इस बारे में स्थानीय विधायक कपूर वाल्मीकि ने बताया कि जल भराव की समस्या को लेकर उन्होंने जिला उपायुक्त से लेकर जिला के उच्च अधिकारियों के सामने जल्दी ही किसानों की फसलों में खड़े पानी निकासी के उचित प्रबंध करने के आदेश दे दिए गए हैं।

माकपा ने की गांवों और खेतों में भरे पानी को निकालने की मांग

- मुंढाल, तालु, बलियाली, रामपुरा, कुंगड़, जताई, धनाना, घुसकानी, मिताथल, चांग, बडेसरा, गुजरानी व सैय गांव व खेतों में जमा बारिश के पानी को निकालने की मांग उठाई

भिवानी। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की भिवानी जिला कमेटी की बैठक शनिवार को पार्टी जिला सचिव मंडल सदस्य सुखदेव पालुवास की अध्यक्षता में शहीद भगत सिंह स्मारक में हुई। पार्टी जिला सचिव कामरेड ओमप्रकाश व राज्य सचिव मंडल सदस्य कामरेड इंद्रजीत सिंह ने बताया कि माकपा जिला प्रशासन व सिंचाई विभाग से मांग करती है कि बवानीखेड़ा व भिवानी के विभिन्न गांव मुंढाल, तालु, बलियाली, रामपुरा, कुंगड़, जताई, धनाना, घुसकानी, मिताथल, चांग, बडेसरा, गुजरानी व सैय गांव व खेतों में जमा बारिश के पानी को निकालने की मांग उठाई। उन्होंने क्षति पूर्ति पोर्टल खोलने, विशेष गिरदावरी करवाने व 50 हजार रुपये प्रति एकड़ मुआवजा देने की भी मांग की है। पार्टी ने भिवानी से 25 जुलाई से महिला मोर्चा द्वारा शुरू किए समाज सुधार जत्थे को समर्थन दिया। वहीं एकजुटता से अभियान चलाने व रोहतक में 27 जुलाई की पार्टी राज्य जनरल बैठक में जाने का निर्णय किया। जिसमें आल इंडिया पार्टी महासचिव एमए बेबी शामिल होंगे।

GANGA INSTITUTE OF TECHNOLOGY AND MANAGEMENT
AN AUTONOMOUS INSTITUTE
JHAJJAR (DELHI-NCR)
NAAC A GRADE
NATIONAL BOARD OF ACCREDITATION NBA ACCREDITED BY
B.TECH ME, ECE and MBA

Industry Oriented Curriculum
Degree Conferred by MDU, Rohtak
GITAM is among the BEST ENGINEERING INSTITUTES OF THE COUNTRY !
RANKED #19 In North India | RANKED #39 Pvt. Institutes in India | RANKED #41 Across India | RANKED #62 Placement Across India
Times Engineering Institute Ranking Survey-2025
ADMISSIONS OPEN 2025-26
B.TECH | B.TECH (LEET)
CSE, CSE (DS), CSE (AI & ML), FIRE TECH. & SAFETY, ELECTRICAL MECHANICAL, ELECTRONICS & COMMUNICATION ENGG., CIVIL
M.TECH | MBA | BBA | MCA | BCA | B.ARCH | M.ARCH | B.ED | M.ED
COURSES FOR WORKING PROFESSIONALS IN FLEXIBLE TIMINGS
B.TECH (FIRE TECH. & SAFETY) | B.TECH (CSE) | M.TECH (CSE) | MBA
For Admission Enquiry
8684000891 / 892 / 893 / 906 / 9654292946
www.gangainstitute.com
GANGA GROUP OF INSTITUTIONS
Approved by AICTE/UGC/NCTE/COA/MDU
GANGA INSTITUTE OF ARCHITECTURE & TOWN PLANNING (GIATP)
9654292905 / 9015115120 | www.architectureganga.com
GANGA INSTITUTE OF EDUCATION (GIE)
8684000916 | www.gangainstituteofeducation.com
Head Office: 4/12, East Punjabi Bagh, New Delhi | +91-9654292902, 03, 04

सत्संग पहले स्वयं के सुधरने पर देता है बल : कंवर साहेब

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

- सतगुरु कंवर साहेब ने बरवाला के हाँसी रोड पर स्थित राधास्वामी आश्रम में भक्तों को प्रवचनों से किया निहाल

वर्तमान कलिकाल में सत्संग सबसे आवश्यक कार्य है क्योंकि सत्संग चिंतन और मनन करवाता है। सत्संग जियो और जीने दो का सूत्र सुझाता है। सत्संग मनसा वाचा कर्मणा की शुद्धता का पाठ पढ़ाता है। सत्संग पहले स्वयं के सुधरने पर बल देता है ताकि आप औरों को प्रेरित कर सकें। सत्संग वह ईंधन है जो पहले आपको प्रकाशित करता है ताकि आपकी ज्योति दूसरे बुझे हुए दियों को प्रकाशित कर सके। यह सत्संग वचन परमसंत सतगुरु कंवर साहेब ने बरवाला के हाँसी रोड पर स्थित राधास्वामी आश्रम में फरमाए। हुजूर कंवर साहेब ने फरमाया कि सत्संग आठ साल के बच्चे से लेकर साठ साल के बुजुर्ग के लिए सबसे उत्तम औषधि है जो हर व्याधि का इलाज है।

गुरु महाराज ने कहा कि धन का संचय शुद्ध जीवन जीने के लिए होना चाहिए जो जरूरत के समय उपयोग में लाया जा सके। यदि संचित धन आपको बुराइयों की तरफ और व्यसनों की और अग्रसर करता है तो उस धन से बुरा कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि त्याग तप परिश्रम के बिना भक्ति नहीं हो सकती।त्याग और तप के बिना दया और प्रेम नहीं पनपते और परिश्रम किये बिना सत्य को नहीं खोजा जा सकता। हुजूर ने कहा कि परमात्मा को पाना बहुत सरल है। उसको पाने के लिए जटिल कुछ नहीं करना बल्कि सरलता को अपनाना है।

इंतजार की घड़ियां समाप्त
साड़ियों की आपकी अपनी दुकान
दिनांक 21 जुलाई 2025 सोमवार से प्रारम्भ
रामा साड़ी पैलेस
पर स्टॉक क्लीयरेन्स सेल
Laxmipati SAREES | Vishal | SUBHASH | VIPUL | TANA BANA | Apple
लक्ष्मीपति, विशाल, जुलाहा, चरखा, विपुल, ऐपल, तानाबाना जैसी मशहूर नामी मिलों की साड़ियां, मोडाल सिल्क, गज्जी सिल्क, एच.ओ. सिल्क, डोला सिल्क, कांजीवरम सिल्क, मूंगा सिल्क, प्योर शिफोन, बंधेज, औरगन्जा, लीलन, भागलपुरी सिल्क, सुपरनैट,कॉटन सिल्क, बंगाली साड़ी, डिजिटल प्रिन्ट एवं हर प्रकार की कलात्मक एवं डिजायनर साड़ियां सेल में बहुत ही कम कीमत पर उपलब्ध है।
सेल में भारी वैवाहिक साड़ियों की अनेक रेंज उपलब्ध है।
डिजाईनर साड़ियां
सिल्क साड़ियां
लहंगा चुन्नी
फैन्सी लांचे
आने वाले वैवाहिक सीजन में यदि आपके यहां कोई विवाहोत्सव हो तो एक बार अवश्य आएं।
रामा साड़ी भण्डार

बिचला बाजार चौक, भिवानी (हरियाणा) | Ph. 243941, 241226
रामा साड़ी भण्डार, मोहन कलैक्शन के सामने, भिवानी

एक पेड़ की तरह है निवेश, अभी लगाएंगे तो भविष्य में देगा छाया

● निवेश की यात्रा शुरू कर रहे हैं तो जान लें कुछ जरूरी नियम● सबसे पहले निवेश के लिए लक्ष्य लेकर चलें और रुकें नहीं● हमेशा लंबी अवधि के लिए निवेश करें और उसे हर साल बढ़ाते जाएं

निवेश मंत्रा
विनोद कौशिक

निवेश एक पेड़ की तरह है। यदि आप इस समय निवेश रूपी पौधा रोपेंगे तो यह बुढ़ापे में आपको छाया देगा और भविष्य को सुरक्षित रखेगा। अगर आप भी अपनी निवेश यात्रा शुरू करने जा रहे हैं या कर चुके हैं तो कुछ नियमों को अपने जीवन में उतार लें। इससे आप आसानी से अपने सपने को पूरा कर सकेंगे। अपने गोल पूरे कर सकेंगे। सबने इन्वेस्टमेंट यानी निवेश शब्द तो बहुत बार सुना होगा। चाहे परिवार की बातचीत, समाचार अपडेट या रोजमर्रा के जीवन में भी, लेकिन क्या आप कभी यह सोचने से रोके हैं कि इसका क्या मतलब है? सबसे सरल अर्थ में, इन्वेस्टमेंट आज पैसे, समय या ऊर्जा देने के बारे में है, आशा है कि यह भविष्य में कुछ और बढ़ेगा। कल्पना करें कि यह एक पौधा रोपने की तरह है, आप कोशिश करते हैं, इसे सावधानी से पोषण करते हैं, यह जानकर कि किसी दिन यह आपको छाया, फल या शायद कुछ सुंदरता भी प्रदान करेगा। यही इन्वेस्टमेंट यानी निवेश का मंत्र है। हमेशा लंबी अवधि के लिए निवेश करें और उसे हर साल बढ़ाते जाएं।

निवेश का महत्व

- इन्वेस्टमेंट आपके पैसे को महंगाई से बचा सकता है।
- आपको आय अर्जित करने में मदद कर सकता है।
- आपको अपने लॉन्ग-टर्म लक्ष्यों के करीब ला सकता है।
- समय के साथ अपनी कैश वैल्यू खोने के बजाय, इन्वेस्टमेंट आपको रियल वेल्थ

बनाने में मदद कर सकता है

- कंपाउंडिंग होती है-जहां आपका रिटर्न गुणा होता है और समय के साथ अपना रिटर्न जनरेट करना शुरू करता है।
- इसलिए, चाहे रिटायरमेंट के लिए बचत हो या उस ड्रीम वेकेशन, इन्वेस्टमेंट आपके सभी वर्तमान और भविष्य के लक्ष्यों को आसानी से पूरा कर सकता है।

निवेश से पहले यह जान लें

जोखिम सहिष्णुता: आप अपने इन्वेस्टमेंट के कुछ या सभी को खोने के विचार से कितना आरामदायक हैं?
समय सीमा: क्या आप शॉर्ट टर्म या लॉन्ग टर्म के लिए इन्वेस्ट करना चाहते हैं?
फाइनेंशियल लक्ष्य: आप अपने इन्वेस्टमेंट के माध्यम से क्या प्राप्त करना चाहते हैं?
विविधता: विभिन्न क्षेत्रों में अपने इन्वेस्टमेंट को फैलाकर जोखिम को मैनेज करने में मदद मिल सकती है, जैसे कि आपके सभी अंडे एक ही टोकरी में न डालें।

इसलिए करें इन्वेस्टमेंट

महंगाई से सुरक्षा: इन्वेस्टमेंट अक्सर महंगाई की तुलना में तेजी से बढ़ते हैं, जिससे आपके पैसे की वैल्यू को सुरक्षित रखा जाता है।
पैसिव आय जनरेट करें: कुछ इन्वेस्टमेंट, जैसे डिविडेंड-भुगतान स्टॉक, नियमित कैश फ्लो प्रदान कर सकते हैं।
फाइनेंशियल लक्ष्य प्राप्त करें: इन्वेस्टमेंट आपको बड़े जीवन की घटनाओं, जैसे घर खरीदना या आराम से रिटायर होना आदि के लिए बचत करने में मदद करता है। इन्वेस्ट करना शुरू करना कभी भी बहुत जल्दी नहीं है, जितनी जल्दी आप शुरू करते हैं, कंपाउंडिंग का लाभ मिलेगा।

आखिर क्या है निवेश

निवेश एक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति या संगठन अपने पैसे को विभिन्न प्रकार की संपत्तियों या वित्तीय साधनों में लगाते हैं, जिससे उन्हें भविष्य में आय या लाभ प्राप्त हो सके। निवेश का उद्देश्य आमतौर पर अपने पैसे को बढ़ाना, आय अर्जित करना, या भविष्य के लिए बचत करना होता है। निवेश एक एसेट और/या एक आइटम है जो या तो अप्रिशिएशन प्राप्त करने या इनकम जनरेट करने के लिए अर्जित किया जाता है। इन्वेस्टमेंट में वृद्धि एक निश्चित अवधि में एसेट/आईटम के मूल्य में वृद्धि है। इससे स्टॉक खरीदना, रियल एस्टेट में इन्वेस्ट करना, गोल्ड खरीदना, या साइड बिजनेस शुरू करना भी हो सकता है। प्रत्येक विकल्प में वृद्धि की क्षमता होती है, विशेष रूप से अगर अच्छी तरह से मैनेज किया जाता है और हां, इसमें कुछ जोखिम शामिल हैं- वहां कोई आश्चर्य नहीं है, लेकिन ये इन्वेस्टमेंट वेल्थ-बिल्डिंग के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

निवेश के प्रकार

1. **वित्तीय निवेश** : इसमें शेयर, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, और अन्य वित्तीय साधन शामिल हैं।
2. **वास्तविक निवेश** : इसमें अचल संपत्ति, सोना, और अन्य भौतिक संपत्तियां शामिल हैं।
3. **व्यवसायिक निवेश** : इसमें व्यवसाय शुरू करने या व्यवसाय में हिस्सेदारी खरीदने के लिए निवेश करना शामिल है।

निवेश के लाभ

1. **आय अर्जित करना** : निवेश से आय अर्जित करने का अवसर मिलता है।
2. **पैसे का बढ़ना** : निवेश से पैसे का मूल्य बढ़ सकता है।
3. **भविष्य के लिए बचत** : निवेश से भविष्य के लिए बचत करने में मदद मिलती है।
4. **विविधीकरण** : निवेश से पोर्टफोलियो का विविधीकरण होता है, जिससे जोखिम कम होता है।
5. **कैपिटल प्रिज़र्वेशन** : जब आप इन्वेस्ट करते हैं, तो आप अपने पैसे को सुरक्षित रखते हैं और समय के साथ वैल्यू को खोने से रोकते हैं।
6. **टैक्स लाभ** : कुछ इन्वेस्टमेंट आपकी टैक्स योग्य आय को कम करने में मदद कर सकते हैं, जो हमेशा बोनस होता है!

निवेश के जोखिम

1. **बाजार का जोखिम** : बाजार की स्थितियों में बदलाव से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।
2. **क्रेडिट जोखिम** : उधारकर्ता के डिफ़ॉल्ट करने से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।
3. **लिक्विडिटी जोखिम** : निवेश को आसानी से बेचने में समस्या हो सकती है।
4. **जोखिम** : मुद्रास्फीति से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।

ऐसे करें निवेश

1. **लक्ष्यों को परिभाषित करें** : सोचें कि आप अपने इन्वेस्टमेंट को प्राप्त करने के लिए क्या चाहते हैं।
2. **अपने जोखिम का आकलन करें** : सोचें कि आप नींद को खोए बिना कितना जोखिम ले सकते हैं।
3. **अपने इन्वेस्टमेंट चुनें:** आपके लिए सही महसूस करने वाले स्टॉक, बॉन्ड, रियल एस्टेट और फंड का मिश्रण चुनें।
4. **नियमित रूप से इन्वेस्ट करें:** हर महीने एक निश्चित राशि अलग रखने पर विचार करें. यह पहले खुद को भुगतान करने की तरह है।

ऐसे करता है काम

आप किसी कंपनी (एक एसेट) में शेयर खरीदने का निर्णय लेते हैं, जिसका आपको विश्वास है कि आपके पास एक आशाजनक भविष्य है। अगर कंपनी की वैल्यू बढ़ती है, तो आपके शेयरों की कीमत भी बढ़ती है या शायद आप किसी ऐसे क्षेत्र में भूमि (संपत्ति) का प्लॉट खरीदते हैं जिसे आप सोचते हैं कि समय के साथ महंगा हो जाएगा। दोनों मामलों में, आपका पैसा काम करने के लिए लगाया जाता है, और अगर चीजें अच्छी तरह से चलती हैं, तो यह आपको लगातार ध्यान दिए बिना लौटना लाता है।

जवानी में कर लें इतना निवेश की बुढ़ापे में न गिननी पड़े परेशानियां

- रूल ऑफ 70 से जानिए बुढ़ापे में कितना पैसा होगा काफी
- आज की अर्थव्यवस्था में पैसा सबसे बड़ी जरूरत बन चुका
- जवानी में गलत फैसले लिए गए, तो बुढ़ापा मुश्किल होगा
- युवावस्था से ही रिटायरमेंट को मजबूत फंड बनाना शुरू करें
- अच्छा फंड भविष्य में आर्थिक तंगी से बचाएगा, जीवन आरामदायक बनेगा

जानकारी
बिजनेस डेस्क

अगर आप भी रिटायरमेंट प्लानिंग कर रहे हैं तो जरा ध्यान दें। आप जितना जल्दी निवेश शुरू करेंगे। उतना ही बुढ़ापे में सुरक्षित होंगे। इसलिए जरूरी है कि जवानी में इतना निवेश कर लें कि बुढ़ापे में परेशान न होना पड़े। इसके लिए आप रूल ऑफ 70 के फार्मूले को भी फॉलो कर सकते हैं। इससे पता चल जाएगा कि बुढ़ाप अच्छे से काटने के लिए आपको कितने धन की जरूरत होगी। आज की अर्थव्यवस्था में पैसा सबसे बड़ी जरूरत बन चुका है। अगर जवानी में गलत फैसले लिए गए, तो बुढ़ापा मुश्किल हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि युवावस्था से ही रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड बनाना शुरू करें, ताकि भविष्य में आर्थिक तंगी से बचा जा सके और जीवन आरामदायक बना रहे।

हमेशा महंगाई का ध्यान रखें

आप भी सोचते होंगे कि अगर आपके पास एक करोड़ रुपये हों, तो जिंदगी की सारी ज़रूरतें पूरी हो जाएंगी, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि यही रकम आने वाले वक्त में आपके लिए कितनी मायने रखेगी। आज जो रकम बड़ी लगती है, वो कल को शायद उतनी काम की न हो। महंगाई हर साल धीरे-धीरे बढ़ती रहती है और इसके साथ हमारी जरूरतों की कीमत भी। ऐसे में अगर आपने भविष्य की प्लानिंग सही से नहीं की, तो रिटायरमेंट के बाद दिक्कतें हो सकती हैं। कई बार हम यह मान लेते हैं कि जितना पैसा आज हमें काफी लग रहा है, वही आगे भी काफी रहेगा, लेकिन असलियत इससे बिल्कुल अलग है। इसलिए जरूरी है कि आप आज ही यह समझें कि आपकी रकम भविष्य में कितनी टिक पाएगी और उसी के हिसाब से अपनी बचत और निवेश की योजना बनाएं।

ऐसे जानें 'रूल ऑफ 70'

आपके पैसों की वैल्यू भविष्य में कितनी रह जाएगी, यह जानने के लिए 'रूल ऑफ 70' एक सरल तरीका है। इसमें आपको बस मौजूदा महंगाई दर जाननी होती है। जब आप 70 को उस महंगाई दर से भाग देंगे, तो जो संख्या निकलेगी, वह यह बताएगी कि कितने साल में आपके पैसों की आधी हो जाएगी। उदाहरण के लिए, अगर महंगाई दर 7% है, तो 70/7=10 साल। यानी 10 साल में आपके 1 करोड़ की वैल्यू 50 लाख जैसी हो जाएगी।

क्यों जरूरी है सही फाइनेंशियल प्लानिंग

लोग अक्सर सोचते हैं कि एक तय रकम जोड़ लेना ही काफी है, लेकिन वे महंगाई के असर को नजरअंदाज कर देते हैं। केवल सेविंग्स करना काफी नहीं है, आपको यह भी समझना होगा कि वो रकम भविष्य में क्या वैल्यू रखेगी। रूल ऑफ 70 जैसे सिंपल फॉर्मूलों से आप अपनी योजना को रियलिस्टिक बना सकते हैं। इससे आपको साफ नजर आएगा कि भविष्य में कितना पैसा वाकई जरूरी होगा।

स्मार्ट प्लानिंग

बुढ़ापे में आर्थिक तंगी से बचने के लिए युवावस्था से ही बचत और निवेश शुरू करें। हर महीने आय का कम से कम 20% रिटायरमेंट फंड में डालें। एसआईपी, पीपीएफ, और म्यूचुअल फंड जैसे विकल्प अपनाएं। महंगाई दर को ध्यान में रखते हुए फंड टारगेट तय करें। रूल ऑफ 70 से समझें पैसों की घटती वैल्यू और उसी अनुसार लॉन्ग टर्म प्लान तैयार करें।

सही लक्ष्य तय करें

बुढ़ापे में आर्थिक तंगी से बचने के लिए जरूरी है कि आप जल्द से जल्द निवेश शुरू करें। नियमित रूप से अपने फाइनेंशियल टारगेट्स की समीक्षा करें। बाजार की स्थितियों और महंगाई के हिसाब से अपनी रणनीति में बदलाव करते रहें। याद रखें, समय के साथ रुपये की वैल्यू घटती है, लेकिन सही प्लानिंग से आप अपनी भविष्य की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं।

विकल्पों का विश्लेषण

निवेश की प्लानिंग एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति या संगठन अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निवेश रणनीति तैयार करते हैं। इसमें निवेश के उद्देश्यों, जोखिम सहनशक्ति, समय सीमा, और निवेश विकल्पों का विश्लेषण करना शामिल है। निवेश के उद्देश्यों को निर्धारित करना, जैसे कि आय अर्जित करना, पैसे का बढ़ना, या भविष्य के लिए बचत करना। निवेश की प्लानिंग एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो व्यक्ति या संगठन को अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकती है।

ग्रीन एफडी : सुरक्षित निवेश के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी करें योगदान

अभी सभी बैंक ग्रीन डिपॉजिट की सुविधा नहीं दे रहे हैं। फिर भी, कई बड़े सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों ने इस दिशा में कदम उठाया है। मोहित गांग के मुताबिक, एसबीआई, बैंक ऑफ इंडिया, एक्सिस बैंक, केनरा बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक, एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक और बैंक ऑफ बड़ौदा जैसे बैंक ग्रीन डिपॉजिट योजनाएं शुरू कर चुके हैं।

बचत
बिजनेस डेस्क

जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण जैसी चुनौतियों से जूझ रही दुनिया अब निवेश के तरीकों में भी धीरे-धीरे बदलाव कर रही है। इन्हीं नए नए तरीकों के बीच भारत में अब एक नया फाइनेंशियल प्रोडक्ट तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इस लोकप्रिय प्रोडक्ट को नाम दिया है ग्रीन डिपॉजिट। यह एक ऐसा निवेश विकल्प है, जो न केवल सुरक्षित और अच्छा रिटर्न देता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाता है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने जून 2023 में ग्रीन डिपॉजिट के लिए एक स्ट्रक्चर जारी किया था, जिसमें बैंकों को जमा पैसे को सिर्फ ग्रीन प्रोजेक्ट्स में लगाने की अनुमति दी गई है। इस प्रोजेक्ट्स में मुख्य रूप से सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक गाड़ियां, पानी और वेस्ट मैनेजमेंट आदि शामिल होते हैं। ग्रीन डिपॉजिट एक सामान्य फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) की तरह ही है, लेकिन इसका असर कहीं अधिक बड़ा और पॉजिटिव है। इसमें बैंकों को सालाना रिपोर्टिंग और थर्ड पार्टी ऑडिट जैसी पारदर्शिता की शर्तें पूरी करनी होती हैं, जिससे निवेशकों का भरोसा मजबूत होता है। स्टेट बैंक, एक्सिस, यूनियन बैंक जैसे कई बड़े बैंक इस विकल्प की पेशकश कर रहे हैं। अगर आप एक ऐसा निवेश चाहते हैं जो आपको आर्थिक लाभ के साथ-साथ धरती को भी लाभ पहुंचाए, तो ग्रीन डिपॉजिट एक समझदारी भरा कदम हो सकता है।

यह कैसे करता है काम

ग्रीन डिपॉजिट में भी निवेशक अपने पैसे को बैंक में एक निश्चित समय के लिए एफडी की तरह जमा करते हैं, और बदले में उन्हें उसका ब्याज मिलता है, लेकिन इस योजना की खासियत यह है कि जमा किए गए पैसे का इस्तेमाल केवल उन परियोजनाओं में किया जाता है, जो पर्यावरण के लिए फायदेमंद हों। इन परियोजनाओं में सौर और पवन ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन, जलवायु परिवर्तन से बचने के लिए हो रहे काम, पानी, वेस्ट मैनेजमेंट और ग्रीन बिल्डिंग आदि शामिल हो सकते हैं। बैंकिंग एक्सपर्ट कहते हैं, "जब कोई व्यक्ति या संस्था ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करता है, तो बैंक उस पैसे को ऐसी परियोजनाओं के लिए लोन देने या निवेश करने में उपयोग करता है।

ऐसे समझें उदाहरण

उदाहरण के लिए, यह पैसा सौर ऊर्जा प्लांट बनाने, इलेक्ट्रिक गाड़ियां बनाने आदि को बनाने या फिर उसके लिए रिसर्च में इस्तेमाल किया जा सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक ने यह सुनिश्चित करने के लिए सख्त नियम बनाए हैं कि इन फंड्स का उपयोग केवल इन्हीं चीजों के लिए ही हो। बैंकों को हर साल इन फंड्स के उपयोग और उनके होने वाले पर्यावरणीय प्रभाव की जानकारी सार्वजनिक करनी होती है।

क्या कहते हैं जानकार

ग्रीन डिपॉजिट में निवेश की प्रक्रिया एफडी की तरह ही होती है। निवेशक को एक निश्चित पैसा (जो आमतौर पर 5,000 रुपये से शुरू होकर 10 करोड़ रुपये तक हो सकती है) जमा करना होता है। जमा करने का समय और ब्याज दर बैंक के नियमों पर निर्भर करती है। इस पैसे को डीआईसीजीसी के तहत बीमा किया जाता है, जिससे निवेशक का पैसा सुरक्षित रहता है।

नियमों और पारदर्शिता

दूसरा अंतर नियमों और पारदर्शिता में है। ग्रीन डिपॉजिट पर भारतीय रिजर्व बैंक की पूरी नजर रहती है और इसके लिए अलग से दिशानिर्देश हैं। इसकी वजह से बैंकों को फंड्स के उपयोग की पूरी जानकारी देने और हर साल ऑडिट करवाना पड़ता है। इसके विपरीत, एफडी में ऐसी कोई शर्त या पारदर्शिता की जरूरत नहीं होती। ब्याज दरों की बात करें तो ग्रीन डिपॉजिट की दरें सामान्य एफडी के बराबर या कभी-कभी थोड़ी अधिक हो सकती हैं, क्योंकि बैंक पर्यावरण के प्रति जागरूक निवेशकों को आकर्षित करने के लिए कभी-कभी अच्छी दरें ऑफर करते हैं। एक और जरूरी अंतर नैतिक प्रभाव का है। ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करके व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से निपटने में योगदान देता है, जो इसे एक नैतिक और जिम्मेदार निवेश विकल्प बनाता है। सामान्य एफडी में ऐसा कोई पर्यावरणीय या सामाजिक प्रभाव नहीं होता।

ग्रीन डिपॉजिट के क्या फायदे

ग्रीन डिपॉजिट का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह निवेशकों को पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने का मौका देता है। अगर आप जलवायु परिवर्तन या प्रदूषण जैसी समस्याओं को लेकर चिंतित हैं, तो यह योजना आपके पैसे को सही दिशा में लगाने का एक तरीका है। इसके अलावा, इसकी ब्याज दरें सामान्य एफडी की तुलना में प्रतिस्पर्धी होती हैं, जिससे निवेशक को आर्थिक लाभ भी मिलता है। यह योजना उन लोगों के लिए भी खास है, जो अपने निवेश को पर्यावरण, सामाजिक और शासन मानकों के आधार पर करना चाहते हैं। ग्रीन डिपॉजिट के जरिए निवेशक अपने पोर्टफोलियो में विविधता ला सकते हैं और साथ ही पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी भी निभा सकते हैं। बैंकों द्वारा हर साल दी जाने वाली रिपोर्ट और तीसरे पक्ष के ऑडिट से निवेशकों को यह भरोसा रहता है कि उनका पैसा सही जगह पर इस्तेमाल हो रहा है। साथ ही, डीआईसीजीसी के तहत बीमा होने से यह निवेश पूरी तरह सुरक्षित भी है।"

एफडी से कितना अलग है ग्रीन डिपॉजिट

ग्रीन डिपॉजिट और एफडी में कई समानताएं हैं। हालांकि, कुछ बुनियादी अंतर दोनों को अलग बनाते हैं। सबसे बड़ा अंतर यह है कि ग्रीन डिपॉजिट में जमा किए गए पैसे का इस्तेमाल सिर्फ पर्यावरण को लाभ पहुंचाने वाले परियोजनाओं में किया जाता है, जबकि एफडी में जमा पैसे का इस्तेमाल बैंक अपने सामान्य कारोबार, लोन देने या दूसरे निवेश में उपयोग कर सकता है। इस तरह ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करने वाला हर व्यक्ति यह दावा कर सकता है कि उसका पैसा पर्यावरण से जुड़ी परियोजनाओं के लिए हो रहा है।

माना जा रहा है कि जब प्रतिस्पर्धा सीमित होती हैतो मूल्य निर्धारण पारदर्शी नहीं रह जाता। इससे परियोजना की लागत अनावश्यक रूप से बढ़ने की आशंका रहती है। ईपीएफओ के टेंडर में अगर अधिक से अधिक कंपनी हिस्सा लेगी तो इसका लाभ उन्हें ही होगा और प्रतिस्पर्धा की वजह से ईपीएफओ को कम लागत में एक बेहतर सेवा प्रदाता कंपनी की सेवा मिलेगी।

ईपीएफओ के डिजिटल प्लेटफॉर्म में हो रहा बदलाव, आखिर क्या होगा असर

बिजनेस डेस्क

देश के 27 करोड़ से अधिक कामगारों की बचत की संरक्षक संस्था के रूप में कार्य कर रही कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने 14 जुलाई 2025 को अपने आईटी सिस्टम (ईपीएफओ प्लेटफार्म) पर व्यापक बदलाव की तैयारी शुरू कर दी है। स्वभाविक है कि इस बदलाव से लोगों पर व्यापक असर भी दिखाई देगा। कुछ राहत मिलेगी तो कुछ खतरे भी बढ़ सकत हैं। ईपीएफओ के इस बदलाव से जुड़ी हालिया प्रक्रिया विशेषकर एजेंसी के चयन हेतु जारी एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट(ईओआई) को लेकर विशेषज्ञों और उद्योग जगत ने पारदर्शिता, निष्पक्षता और संभावित पक्षपात को लेकर गहरी चिंता जताई है। एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट दस्तावेज़ में एक प्रमुख शर्त यह है कि बोलीदाता ने प्रस्तावित कोर बैंकिंग सोल्यूशन (सीबीएस) को किसी अनुसूचित कॉर्मसियल बैंक में लागू किया हो। पहली नजर में यह एक सामान्य, अनुभव आधारित मानदंड लगता है, लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार यह शर्त ईपीएफओ की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है।

खातों का रख-रखाव, अंशदान प्रबंधन, पेंशन का वितरण आदि है। इसके लिए एक मजबूत, स्केलेबल और यूज़र-फ्रेंडली डिजिटल प्लेटफॉर्म जरूरी है, लेकिन इसके लिए कोर बैंकिंग सॉल्यूशन (सीबीएस) की अनिवार्यता अप्रासंगिक मानी जा रही है। इसका कारण ये है कि ईपीएफओ का काम कोर बैंकिंग से संबंधित नहीं है। ईओआई की भाषा से यह प्रतीत होता है कि बैंकिंग क्षेत्र को सेवा देने वाली कंपनी को प्राथमिकता दी जा रही है। प्री-बिड मीटिंग में शामिल कंपनियों ने यह भी ये सवाल उठाये किया कि दस्तावेज़ में वर्णित तकनीकी विशिष्टताएँ एक कंपनी विशेष की क्षमताओं से काफी मेल खाती हैं। कम्पनियों ने ईपीएफओ पोर्टल पर क्वेरी जेनेरेट कर अपनी चिंता व्यक्त की लेकिन ईपीएफओ ने कंपनियों के सभी आपत्ति को दरकिनार कर दिया।

नवाचार की राह में बाधा

ईओआई की शर्तों से कई प्रतिष्ठित कंपनियां इस काम के लिए बिड की करने की प्रक्रिया से बाहर हो सकती हैं, खासकर जिन्होंने डिजिटल गवर्नेंस और सार्वजनिक सेवाओं के लिए बेहतरीन समाधान विकसित किए हैं लेकिन बैंकिंग सीबीएस पर काम नहीं किया है। ईओआई बैठक में भाग लेने वाली प्रमुख कंपनियां टीसीएस, इंफोसिस, विप्रो, सीआईपीएल, एडब्ल्यूएस, एचसीएल सॉफ्टवेयर और फिन्सिल थीं। जबकि केवल एक-दो कंपनियां ही सीबीएस का अनुभव रखती हैं।

इस पर क्या है विशेषज्ञों की राय

ईपीएफओ कोई बैंक नहीं

ईपीएफओ कोई बैंक नहीं है। इसकी कार्यप्रणाली सार्वजनिक सेवा मंच जैसी है। ऐसे में बैंकिंग सीबीएस की अनिवार्यता तकनीकी दृष्टि से गैरजरूरी और रणनीतिक रूप से भ्रामक है। -**पवन दुग्गल, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर एवं सायबर सुरक्षा विशेषज्ञ**

उद्देश्य समाधान ढूंढना नहीं

यह आरएफपी किसी खास उत्पाद के लिए रिवर्स इंजीनिरिड लगती है। ये बहुत ही रिस्ट्रीक्टिव है एवं इसका उद्देश्य समाधान ढूंढना नहीं, बल्कि समाधान में किसी ख़ास बोलीदाता (बिडर) को लाभ पहुंचाना है। -**अनूज प्रकाश अवस्थी, टेक्नोलॉजी एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट।**

नवाचार-विरोधी भी

- डिजिटल एवं आईटी के काम के लिए टेंडर की प्रक्रिया में हिस्सा लेने वाली एक प्रमुख कंपनी एमनेक्स टेक्नॉलाजी का कहना है कि यह सिर्फ खराब खरीद प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह नवाचार-विरोधी भी है। यह सरकार के 'मेक इन इंडिया' और 'ओपन इनोवेशन' के मूल सिद्धांतों के भी खिलाफ है।
- वहीं वित्त मंत्रालय में वरिष्ठ सलाहकार के पद पर काम कर चुके एक अधिकारी ने बताया कि टेंडर प्रक्रिया में किसी विशेष शर्त को जोड़ना या किसी खास कंपनी को फायदा पहुंचाने के लिए शर्तों का निर्धारण जीएफआर एवं सीवीसी के नियमों का उल्लघन है। उनके मुताबिक, अगर प्रतियोगिता का दायरा सीमित होगा, तो बोली की कीमतें बाजार के अनुरूप नहीं होंगी।

ईपीएफओ के लिए आगे की राह

- ईओआई जमा करने की अंतिम तिथि जैसे-जैसे नजदीक आ रही है, ईपीएफओ पर यह दबाव बढ़ रहा है कि वह इस प्रक्रिया की समीक्षा करे, और योग्यताओं को कार्य-आधारित और समाधान-उन्मुख तरीके से परिभाषित करे। साथ ही इस प्रक्रिया मेंतकनीकी रिप्रजेंटेशन को प्रमुखता दी जाए। मूल्यांकन की प्रक्रिया में विविध पारदर्शी मानदंड जोड़े जाएं साथ ही पूरी प्रक्रिया में निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाया जाए।

खबर संक्षेप

यदुवंशी स्कूल मंदौला में मनाया येलो डे

चरखी दादरी । मंदौला स्थित यदुवंशी शिक्षा निकेतन विद्यालय के प्रांगण में कक्षा नर्सरी से पहली तक के विद्यार्थियों द्वारा येलो डे का आयोजन बड़े ही उत्साह और रंग-बिरंगे माहौल में किया। इस अवसर पर सभी बच्चों ने पीले परिधान पहनकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और हर्षोल्लास के साथ भाग लिया। विद्यालय द्वारा बच्चों को आम काटकर खिलाए, जिससे बच्चों के चेहरों पर खुशियों की लहर दौड़ गई।

एक पेड़ मां के नाम मुहिम के तहत पौधरोपण किया

बाढड़ा। गांव डोहका हरिया में पूर्व सरपंच अजीत सिंह के पुत्र प्रकृति प्रेमी समाजसेवी विकास सांगवान द्वारा प्रधानमंत्री द्वारा चलाई एक पेड़ मां के नाम के तहत गांव में फलदार पौधे व छाया धार पौधे बांटे और राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय और प्राथमिक विद्यालय में भी सैकड़ों पौधे लगाए गए। इस दौरान उन्होंने कहा कि हमे अपने आस पास के क्षेत्र में बरसात के मौसम में ज्यादा से ज्यादा पौध रोपण करना चाहिए ताकि आने वाले बच्चों का भविष्य सुरक्षित हो सके।

पूर्व सैनिकों ने अपनी मांगों को लेकर बैठक की

बाढडा। कस्बे के सर छोटूराम किसान भवन में पूर्व सैनिकों की मांगों को लेकर बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता जिला प्रधान राजेश बाढड़ा ने की बैठक में अपनी मांगों को लेकर विचार विर्मश किया और समाधान नहीं होने पर आंदौलन करने की बात कहीं। बैठक में सैनिकों को संबोधित करते हुए राजेश बाढड़ा व चिरेंद्र पहलवान बडराई ने कहा कि सैनिकों की मांग नहीं होने पर भी कैंटिन कैंपश को बदला जा रहा है जो सरा सर गलत है।

ट्रैफिक पुलिस ने नियमों के प्रति किया जागरुक

चरखी दादरी। शनिवार को ट्रैफिक पुलिस ने थाना प्रभारी उपनिरीक्षक दिलबाग सिंह के नेतृत्व में 152डी हाईवे पर वाहन चालकों को सड़क सुरक्षा के नियमों के प्रति जागरुक किया। उपनिरीक्षक दिलबाग सिंह ने बताया कि सभी लोगों को यातायात के नियमों का विशेष रूप से पालन करना चाहिए, जिससे हम अपने साथ-साथ सामने वाले व्यक्ति को भी दुर्घटना से बचा सकते हैं।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ को लेकर प्रतियोगिता

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा के वीर शहीद गुलाब सिंह पीएम श्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ विषय पर पोस्टर मेकिंग एक्टिविटी का आयोजन स्वास्थ्य विभाग टीम द्वारा किया गया। जिसमें छात्राओं द्वारा इस विषय पर पोस्टर बना कर अपनी प्रतिभा को दिखाया गया। इसमें छात्रा खुशी, काफी, अंकिता, काजल, शबाना द्वारा उत्कृष्ट चित्रकारी की गई उनको टीम द्वारा सम्मानित किया गया।

जगह-जगह गड्ढे, ब्लॉक सीवरेज व दूषित पेयजल की समस्या बनी जी का जंजाल

शहर का पॉश इलाका सेक्टर 23 भी मूलभूत सुविधाओं से महरूम

सेक्टर-23 के निवासियों ने प्रशासन से लगाई गुहार, कम से कम मूलभूत सुविधाएं तो कराई जाए मुहैया

हरिभूमि न्यूज ⏭| भिवानी

भिवानी। समस्याओं को लेकर नारेबाजी करते हुए। फोटो : हरिभूमि

शहर का पॉश इलाका सैक्टर-23 इन दिनों मूलभूत सुविधाओं से महरूम है। सेक्टर में पेयजल, सीवरेज व सड़क जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। वहीं सड़क पर जगह-जगह गड्ढे होने से उन्हे सैक्टर में बीमारियां फैलने का भय भी सता रहा है।

हद की बात है कि सड़क, सीवरेज व दूषित पेयजल की समस्या के समाधान की मांग को लेकर सैक्टरवासी कई बार संबंधित विभाग के अधिकारियों को अवगत करवा चुके है, लेकिन आज तक उनकी समस्या का कोई समाधान नहीं हुआ, जिसके चलते उनकी समस्याएं गुणात्मक रूप से बढ़ती जा रही है। अधिकारियों की नागरिकों व अपनी जिम्मेवारी के प्रति गैर जिम्मेदाराना रवैये के खिलाफ सैक्टर 23 के निवासियों का गुस्सा फूटा तथा उन्होंने रेजीडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन के मुख्य संरक्षक महेंद्र सिंह श्योराण के नेतृत्व में शनिवार को रोष जताते हुए उपरोक्त समस्याओं के समाधान की मांग उठाई। रेजीडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन सेक्टर-23 के मुख्य संरक्षक महेंद्र सिंह श्योराण, भगतराम, कर्ण सिंह ने कहा कि सैक्टर-23 में बरसात से पूर्व ही करीबन एक माह पहले सडक़ को उखाड़ा गया था, ताकि उसे नया बनाया जा सकें। जिसके बाद सैक्टरवासियों में उम्मीद जगी थी आखिरकार उन्हे नारकीय जीवन से थोड़ी राहत तो मिलेगी। लेकिन संबंधित विभाग के अधिकारियों द्वारा सडक़ो नया बनाने की बजाए उसे ज्यो की त्यो ही छोड़ दिया गया। जिसके बाद उनकी परेशान और भी बढ़ गई तथा अब सैक्टर-23 के मकान नंबर-735 से मार्केट तक जाने के लिए रोड़ ही नहीं बचा। उन्होंने कहा कि इस सडक़ मार्ग से अब वाहन चालकों का दूर पैदल निकलना भी दूभर है। जिसके समाधान की मांग को लेकर उन्होंने ठेकेदार से गुहार लगाई थी कि कम से कम यहां पर रोड़े ही डलवा दिए जाए, ताकि आवागम का राह बन पाए।

महामारी फैलने का भय

महेंद्र श्योराण ने बताया कि यही नहीं सेक्टर-23 में डाले जा रहे अंडरग्राऊंड गैस कनेक्शन के लिए भी जगह-जगह खोदे गए गड्ढे सेक्टरवासियों के लिए जी का जंजाल बने हुए है। क्योंकि इन गड्ढो में केवल बरसाती पानी ही नहीं, बल्कि अपितु सीवरेज का गंदा पानी भी जमा रहता है। जिसमें मक्खी-मच्छरों की भरमार रहती है। जिसके कारण सैक्टर में महामारी फैलने का भय बना हुआ है। श्योराण ने कहा कि यह नहीं सैक्टर में दूषित पेयजल की सप्लाई भी एक गंभीर समस्या बनी हुई है, जिसके समाधान की मांग भी कई बार संबंधित अधिकारियों को लगाई, लेकिन उनके कानों पर कोई जू तक नहीं रेंगी।

समस्याओं के समाधान की गुहार

महेंद्र सिंह श्योरण सहित अन्य सैक्टरवासियों ने जिला प्रशासन व संबंधित विभागों के अधिकारियों से गुहार लगाई की सेक्टर-23 की उपरोक्त समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान किया जाए, ताकि सेक्टरवासी नारकीय जीवन जीने व बीमारियां की चपेट में आने से बचाया जा सकें। इस अवसर पर कर्मबीर कटारिया, पूर्व लैक्चरर कर्ण सिंह, सरोज बंटी, सुमित्रा, निर्मला सहित अन्य नागरिक मौजूद रहे।

भिवानी। मांगों को लेकर नारेबाजी करते कर्मचारी।

ऑल हरियाणा पॉवर कारपोरेशन वर्कर्स यूनियन की बैठक आयोजित, दी आंदोलन की चेतावनी

भिवानी। बीटीएम चौक स्थित सिटी यूनिट कार्यालय में शनिवार को सर्व कर्मचारी संघ से संबंधित ऑल हरियाणा पॉवर कारपोरेशन वर्कर्ज यूनियन की महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान अधिकारियों द्वारा तकनीकी कर्मचारियों के साथ की जा रही मनमानी, कार्यालयी आदेशों की अनदेखी और कार्यशैली पर गंभीर आपत्ति दर्ज की गई। बैठक की अध्यक्षता सिटी यूनिट प्रधान रविंद्र यादव ने की तथा संचालन यूनिट सचिव राजेश दुल्हेड़ी ने किया। इस दौरान सभी उप-यूनिटों के प्रधान, सचिव व कोषाध्यक्ष उपस्थित रहे तथा सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि यदि यह मनमानी शीघ्र नहीं रोकी गई, तो आंदोलन किया जाएगा। इस मौके पर सर्कल सचिव अशोक गोयत, राज्य ऑडिटर धर्मबीर भाटी व सेंटर काउंसिल सदस्य चांदराम ने कहा कि एक तरफ सरकार कर्मचारियों का शोषण करने में लगी हुई है, जिसके चलते परेशान पहले से ही परेशान है। जिसके बाद अधिकारी भी कर्मचारियों को परेशान करने में कमी नहीं छोड़ी जा रही। उन्होंने कहा कि विभागीय आदेशों के बावजूद भी तकनीकी कर्मचारियों को फील्ड कार्यों से हटाकर कार्यालयों में तैनात किया जा रहा है, जो पूरी तरह गलत एवं कर्मचारी विरोधी रवैया है। इसके अतिरिक्त वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा अपने प्रभाव का दुरुपयोग करते हुए मनमाने ढंग से आदेश जारी करवाना अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है और प्रशासनिक प्रक्रिया की गंभीर अवहेलना है। यही नहीं अधिकारी अपने चहेतों को मनमानी सीट पर बैठाने का कार्य करते है। जिसके चलते कर्मचारियों में भारी रोष है तथा यूनियन ने घोषणा की है कि अधिकारियों की मनमानी के खिलाफ ऑल हरियाणा पॉवर कारपोरेशन वर्कर्ज यूनियन 21 जुलाई को भिवानी के अधीक्षक अभियंता के खिलाफ रोष प्रदर्शन कर अधिकारियों को चेताने का काम किया जाएगा। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष अशोक साहनी, राज्य सचिव लोकेश, प्रेस प्रवक्ता अभिषेक शर्मा, ऑपरेशन सब यूनिट प्रधान शमशेर, बवानीखेड़ा प्रधान अमित चौहान रामलाल एवं समयपाल प्रधान, तोशाम नं. 1 व 2, मंदीप फौगाट प्रधान भिवानी नं.1, मंदीप मुवाल, बिजेन्द्र गिल, योगेश कामरा, धीरेज शर्मा, मंदीप बेरवाल, अनिल, कमल सहित अनेक कर्मचारी उपस्थित रहे।

नौनिहालों ने सुनाई कहानियां

हरिभूमि न्यूज ⏭| भिवानी

अतिथियों के साथ प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विद्यार्थी।

लिटिल हार्ट्स कॉन्वेंट स्कूल में कक्षा 3 के विद्यार्थियों के लिए रंगारंग स्टोरी टेलिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी रचनात्मकता व आत्मविश्वास का शानदार परिचय दिया। विद्यालय के महासचिव संजय गोयल, एमडी पवन गोयल व भावना गोयल ने बताया कि विद्यार्थियों ने रोचक कहानियां प्रस्तुत कर विभिन्न पात्रों का अभिनय, संवाद शैली और भाव-भंगिमाओं के माध्यम से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

मंच पर बच्चों ने न केवल कहानी सुनाई, बल्कि प्रॉप्स, फिंगर पपेट्स और सरल पोशाकों का उपयोग कर अपने पात्रों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। प्रतियोगिता समन्वयक पूनम मस्ताना के निर्देशन में आयोजित की। कक्षा 3 की शिक्षिकाएं चारू, कविता, सरिता, हिमानी, डेजी और भावना ने आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाई और छात्रों का मार्गदर्शन किया। विद्यालय की प्रधानाचार्या वीणा सेठ ने बच्चों की प्रस्तुतियों की सराहना की। इस प्रकार की प्रतियोगिताएं बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता, मंच संचालन कौशल और आत्मविश्वास के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

हमारा विद्यालय निरंतर ऐसे रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों को संपूर्ण विकास के अवसर प्रदान करता रहेगा। विद्यालय की निदेशिका ऐश्वर्या सिंघल, निदेशक राम सिंघल, राहुल गोयल, विनय गोयल, निश्चल गोयल व साक्षी गोयल ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि लिटिल हार्ट्स कॉन्वेंट स्कूल हमेशा से ही अकादमिक के साथ-साथ सह-शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने की दिशा में अग्रसर है।

शहीद मंगल पांडे स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी थे: महेन्द्र

भिवानी। शहीद मंगल पांडे एक स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी थे, इनका जन्म 19 जुलाई 1827 को अविभाजित भारत की ब्रिटिश प्रेसीडेंसी के आगरा और अवध के संयुक्त प्रांत के नागवा गांव नजदीक गंगा नदी किनारे उत्तर प्रदेश में एक जमींदार भूमिहार ब्राह्मण परिवार में दिवाकर पांडे के घर में हुआ था। इनकी सारी शिक्षा गांव में और बलिया में हुई थी, ये बात स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी कल्याण संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष महेन्द्र पाल यादव ने उनके जन्मदिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि वे जन्म से ही क्रांतिकारी विचारधारा के थे। उन्होंने देश की आजादी के लिए कड़ा संघर्ष किया और अपना पूरा जीवन देश के लिए कुर्बान कर दिया। इस अवसर पर जसबीर फौजी, रणबीर सांगवात, सुरजभान बामला, बिजेन्द्र कोट, धर्मपाल ग्रेवाल, रामअवतार गुप्ता, सुभाष बामला आदि मौजूद रहे।

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस मिलकपुर में शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭| बवानीखेड़ा

आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षक व बच्चे। फोटो : हरिभूमि

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस मिलकपुर के प्रांगण में आज प्रातःकालीन सभा के दौरान छात्र परिषद का शपथ ग्रहण समारोह भव्य रूप से आयोजित किया गया। इस अवसर पर स्कूल के नव-निर्वाचित पदाधिकारियों ने अपने-अपने पदों की शपथ ली। हेड बॉय के रूप में पारस और हेड गर्ल के रूप में श्रुति ने जिम्मेदारी संभाली। दीपिका को इको क्लब का प्रमुख, केशव को स्पोर्ट्स क्लब का प्रमुख और आयुषी को साहित्यक क्लब का प्रमुख बनाया गया।

हाउस कैप्टन में अब्दुल कलाम हाउस के कप्तान गौतम और उप कप्तान जिज्ञासा, ध्यानचंद हाउस के कप्तान दीक्षांत और उप कप्तान भारती, मदर टेरेसा हाउस के कप्तान भूपेश और उप कप्तान कामना, वहीं सरोजिनी नायडू हाउस के कप्तान कर्ण और उप कप्तान हिमांशु चुने गए। इस विशेष कार्यक्रम में स्कूल के चेयरमैन आनंद यादव ने सभी विद्यार्थियों को ईमानदारी और मेहनत से कार्य करने की प्रेरणा दी। प्रधानाचार्य नितीश मिश्र ने भी अपने प्रेरणादायक संबोधन में छात्रों को नेतृत्व के गुणों और उत्तरदायित्वों के प्रति सजग रहने का संदेश दिया। कार्यक्रम में निदेशक साहिल यादव, उप प्रधानाचार्य गीता यादव और प्राथमिक प्रभारी प्रोमिला यादव की उपस्थिति ने समारोह की गरिमा को और बढ़ा दिया। विद्यालय परिवार ने सभी पदाधिकारियों को उनके नए दायित्वों के लिए शुभकामनाएँ दीं।

प्राइवेट स्कूल एसो. ने लगाए गोकुलपुरा के स्कूल में पौधे

हरिभूमि न्यूज ⏭| बहल

बहल ब्लॉक के गौरव पब्लिक स्कूल, गोकलपुर में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए गए और उनके संरक्षण का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में संस्था की चेयरपर्सन बबीता देवी, प्रधानाचार्य सत्यनारायण, तथा प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के प्रतिनिधि शामिल रहे। इस अवसर पर पूर्व प्रधान इंद्र सिंह श्योराण, सचिव कुलदीप सिंह, नरेश कुमार सिहाग, कमल सिंह भांभू, प्रवीण कुमार सहित अन्य पदाधिकारी एवं विद्यालय स्टाफ मौजूद रहे।

पूर्व ब्लॉक प्रधान इंद्र सिंह श्योराण ने जानकारी दी कि प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन द्वारा प्रतिदिन किसी एक विद्यालय में पौधारोपण किया जा रहा है। यह मुहिम केवल पौधे लगाने तक सीमित नहीं, बल्कि उनके संरक्षण और पालन-पोषण की जिम्मेदारी भी विद्यालयों को सौंपी जाती है। विद्यालय प्रबंधन और छात्रों ने भी इस पहल में उत्साहपूर्वक भाग लिया और पर्यावरण की रक्षा हेतु गंभीरता से पौधों की देखभाल का प्रण लिया।

सांसद ने रेलवे स्टेशन पर लगे उद्घाटन पत्थर को साफ-सुथरा रखने के दिए निर्देश

हरिभूमि न्यूज ⏭| भिवानी

भिवानी। रेलवे स्टेशन पर पूर्व सीएम स्व. बंसीलाल के लगे उदघाटन पत्थर की सफाई न होने का इशारा करती सांसद किरण चौधरी। फोटो : हरिभूमि

शनिवार को राज्य सभा सांसद किरण चौधरी ने अमृत भारतीय योजना के तहत भिवानी के रेलवे स्टेशन के नवीनीकरण के कार्य का निरीक्षण किया। निरीक्षण का कार्य पूरा करने के बाद सांसद किरण चौधरी अपने वाहन में बैठने के लिए चली ही थी कि एक समर्थक ने कहा कि मैडम यहां पर बाबू जी (पूर्व सीएम स्व. बंसीलाल) का रेलवे स्टेशन पर उदघाटन पत्थर लगा हुआ है।

इतना सुनते ही सांसद किरण चौधरी वापस मुड़ी और अधिकारियों से कहा कि किस तरफ बाबू के नाम का पत्थर लगा है। अधिकारियों ने एक तरफ इशारा करते हुए बताया कि उस तरफ पत्थर लगा हुआ है। किरण चौधरी सीधी उदघाटन पत्थर के पास पहुंची। उस वक्त बाबू जी के उदघाटन पत्थर की सफाई नहीं की हुई थी। पत्थर पर सफेदी के छीटे लगे हुए थे। पत्थर की तरफ इशारा करते हुए सांसद किरण चौधरी ने रेलवे अधिकारी को मौके पर बुलाया और कहा कि भाई इसका भी बेहतरीन तरीके से रखरखाव करें। रेलवे स्टेशन इन्हीं की देन है। अधिकारी ने तत्काल उदघाटन पत्थर को साफ करने के निर्देश दिए। हालांकि निर्देश देने के बाद सांसद किरण चौधरी अपनी गाड़ी में बैठ कर अगले प्रोग्राम के लिए निकल गई। उनके जाने के बाद रेलवे कर्मचारियों ने बाबू जी के उदघाटन पत्थर की सफाई की।

विधायक ने वार्ड स्तर से आमजन को रैली में ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी

हरिभूमि न्यूज ⏭| बाढड़ा

सीएम नायबसिंह सैनी के 24 जुलाई के झोझू के आगमन पर होने वाली विकास रैली की सफलता के लिए रैली संयोजक उमेद पातुवास ने अपने फार्महाऊस पर पार्टी पदाधिकारियों, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों से मुलाकात कर प्रचार अभिसयान की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने वार्ड स्तर से आमजन को रैली में ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी। विधायक उमेद पातुवास ने अपने निवास पर आयोजित बैठक में 24 जुलाई को झोझू कलां के खेल स्टेडियम में आयोजित होने वाली विकास रैली की सफलता की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई।

बैठक में चरखी दादरी जिले के जिला परिषद सदस्यगण, भाजपा जिला कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारी, बाढड़ा, झोझू कलां व चरखी दादरी खंड के पंचायत समिति सदस्य, चेयरमैन-वाइस चेयरमैन, त्रिदेव सदस्यगण, सभी जोन प्रभारी और समर्पित कार्यकर्ताओं ने भाग लेकर विकास रैली की तैयारियों को लेकर भव्य रूप दिया।

उन्होंने कहा कि सभी कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी, समर्पण और उत्साह इस रैली को न केवल सफल बनाएगा, बल्कि पूरे क्षेत्र व प्रदेश में एक ऐतिहासिक क्षण के रूप में दर्ज होगा। हम सब मिलकर 24 जुलाई की इस विकास रैली में जनभागीदारी और जनसमर्थन का एक इतिहास रचें। बैठक में भाजपा चरखी दादरी जिला अध्यक्ष सुनील इंजिनियर, दी केंद्रीय सहकारी बैंक चेयरमैन सुधीर चांदवास, चेयरमैन आंनद फौजी, राजेंद्र शर्मा कारी आदि मौजूद रहे।

लोहारू के स्वर्ण जयंती पार्क में पौधा रोपण करते हुए पीएम श्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की प्राचार्य व छात्राएं।

विद्यार्थियों और शिक्षकों ने किया पौधरोपण

लोहारू। इन दिनों चलाए जा रहे एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम तहत शनिवार को स्थानीय पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की प्राचार्या दर्शना कुमारी के नेतृत्व में स्टाफ सदस्यों और स्कूली छात्राओं विद्यालय परिसर और स्वर्ण जयंती पार्क में पोधारोपण किया और उनके पालन पोषण की जिम्मेदारी ली। प्राचार्या दर्शना कुमारी ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य न केवल पर्यावरण को हरा-भरा बनाना है, बल्कि विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति प्रेम व जिम्मेदारी की भावना भी विकसित करना है। इस अभियान के तहत 500 पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने कहा कि विद्यालय की छात्राओं ने अपनी मां के नाम से एक पौधा लगाने का संकल्प लिया है। जिसके छात्राएं पौधा रोपण करने के साथ साथ उनका पालन पोषण की भी शपथ ले रही हैं। इस मौके पर इको क्लब प्रभारी श्यामसुंदर दमकोरा, संजय सैनी सहित स्टाफ सदस्य और छात्राएं मौजूद थी।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने भारी भीड़ जुटाने के लिए कसी कमर

300 करोड़ की योजनाओं को स्वीकृति मिलने की उम्मीद

- अनेक विभागों की योजनाओं पर मंथन, बड़े प्रोजेक्टों को मिल सकती है हरी झंडी

हरिभूमि न्यूज ⏭| बाढड़ा

विधायक उमेद पातुवास ने सीएम नायब सिंह सैनी से मुलाकात कर आगामी 24 जुलाई को झोझू में होने वाली रैली की तैयारियों की जानकारी दी तथा उनके साथ बाढड़ा विधानसभा क्षेत्र की अलग अलग विभागों की पांच सौ से अधिक मांगों पर मंथन किया।

इनमें से अधिकतर पर पहले ही विभागों द्वारा धरातली सत्यापन होने के कारण सीएम इनका मंच से स्वीकृति का एलान कर सकते हैं। छह साल बाद सीएम का विधानसभा क्षेत्र में आने से अनेक बड़े प्रोजे1टों की सौगात मिलनी तय मानी जा रही है। चंडीगढ स्थित सीएम आवास संत कबीर कुटीर पर मु यमंत्री नायब सिंह सैनी से मुलाकात करते हुए विधायक उमेद पातुवास ने बताया कि 24 जुलाई को झोझू में आयोजित होने वाली रैली को लेकर क्षेत्र की जनता में उत्साह का माहौल बना हुआ है। रैली में जनभागीदारी के लिए भाजपा कार्यकर्ताओं के अलावा क्षेत्र के पंचायत प्रतिनिधि भी गांव गांव प्रचार में जुटे हैं तथा सभी गांवों की ग्राम पंचायतों से लेकर कृषि, शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा स्वास्थ्य, पंचायत विभाग, सिंचाई, कृषि मार्केटिंग बोर्ड, लोकनिर्माण विभाग सहित सभी विभागों की समस्याओं से सीएमओ को अवगत करवा दिया गया था और उन्होंने संबधित सभी विभागों से धरातली रिपोर्ट भी प्राप्त कर ली है जिससे नब्बे फिसदी सही व जायज मांगे हैं। सीएम नायब सिंह सैनी ने विधायक उमेद पातुवास व वरिष्ठ अधिकारियों के संग योजनाओं के मांगपत्रों पर मंथन किया।

इस दौरान ग्रामीण क्षेत्र के बड़े व छोटे संपर्क सड़कमार्गो के निर्माण के अलावा ग्रामीण क्षेत्र में सामुदायिक भवन, नए अमृत सरोवरों के लिए बजट, शिक्षा के लिए स्कूल अपग्रेड व विज्ञान लैबों का संचालन करवाने, कालेजों में रिक्त पदों पर तुरंत नई तैनाती व छात्राओं के लिए विशेष बस सेवाएं इत्यादि पेर मंथन कर विभाग से उनको अंतिम प्रारुप तैयार करने का दिशानिर्देश दिया।

सीएम के झोझू दौरे को लेकर उत्साह

बाढड़ा के विधायक उमेद पातुवास ने कहा कि सीएम नायब सिंह सैनी अपने झोझू दौरे को लेकर उत्साहित हैं और वह विधानसभा चुनाव में जनता द्वारा भाजपा के पक्ष में दिए गए आशीर्वाद के लिए उनका आभार भी प्रकट करेंगे। उनका दौरा विधानसभा क्षेत्र में विकास के नए द्वार खोलने का काम करेगा। भाजपा सरकार दक्षिणी हरियाणा के ग्रामीण विकास, शिक्षा, चिकित्सा व सड़कमार्ग के अलावा सिंचाई व पेयजल के लिए नहरी परियोजनाओं को बड़े स्तर पर बजट देने के लिए कटिबद्ध है। सीएम नायब सिंह सैनी ने उनको २४ को झोझू में क्षेत्र के चहुंमुखी विकास के लिए पर्याप्त मात्रा बजट जारी करने का भरोसा दिया है जो इस क्षेत्र के विकास में मील का पत्थर साबित होगा।

डीवीजन का दर्जा देने की उम्मीद

प्रदेश की भाजपा सरकार के तीन चरणों में केवल प्रथम चरण में सीएम मनोहर लाल ने बाढड़ा अनाज मंडी में दो सौ करोड़ की योजनाओं को स्वीकृति दी थी और फिर दूसरे चरण में बाढड़ा में प्रवेश नहीं किया बल्कि वर्ष 2022 में दादरी रैली से ही क्षेत्र की कुछ मांगों को स्वीकृति मिली थी जिनपर अभी तक काम भी शुरु नहीं हो पाया है। प्रदेश के सीएम नायब सिंह सैनी द्वारा सरकार बनते ही क्षेत्र के आगमन को लेकर जनता में खुशी की लहर बनी हुई है। उनके समक्ष जनप्रतिनिधियों द्वारा बिजली विभाग के बाढड़ा उपमंडल कार्यालय को डिवीजन का दर्जा देकर कार्यकारी अभियंता की तैनाती करने, जनस्वास्थ्य विभाग के कार्यालय को डीवीजन का दर्जा देने, कादमा में उपमंडल कार्यालय का संचालन कर एसडीओ की तैनाती, बाढड़ा से गुजरने वाले हिसार रेवाड़ी सड़कमार्ग को अपग्रेड कर दस मीटर चौड़ा करने, वेयरहाऊस निर्माण की उम्मीद बंधी है।

खबर संक्षेप

सरकार की मनमानी के खिलाफ जारी रहा धरना

बाढड़ा। कस्बे के जुई रोड पर अनाज मंड़ी के पास भाकियू द्वारा संचालित बेमियादी धरना तीसरे दिन भी जारी रहा तथा सरकार द्वारा क्षेत्र के किसानों की सुध नहीं लेने पर रोष प्रकट करते हुए मुख्यमंत्री के 24 जुलाई के झोझूकलां आगमन पर बड़ा रोष प्रदर्शन करने का एलान किया। आज के धरने पर पूर्व विधायक सोमवीर श्योराण, पूर्व विधायक रणबीर सिंह मंदौला सहित सैंकड़ों सामाजिक संगठनों, राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों ने पहुंच कर किसानों के आंदोलन का समर्थन किया।

विद्यार्थियों ने किया सीखी गई कलाओं का प्रदर्शन

भिवानी। भिवानी पब्लिक स्कूल के सभागार में 17 से 19 जुलाई तक आयोजित तीन दिवसीय नाटक कार्यशाला का सफलतापूर्वक समापन हुआ। कार्यशाला विशेष रूप से कक्षा 8वीं से 10वीं तक के छात्रों के लिए आयोजित की गई थी। कार्यशाला का संचालन प्रसिद्ध नाट्य निर्देशक एवं रंगकर्मी कौशल भारद्वाज, अनिल बजाज और यश केजरीवाल ने किया।

राज्यसभा सांसद को सौंपा ज्ञापन

भिवानी। शनिवार को भिवानी रेलवे जंक्शन के निरीक्षण पर पहुंची राज्यसभा सांसद किरण चौधरी को रेल अंडरपास महापंचायत भिवानी ने प्रधान दिनेश उर्फ लाला पहलवान की अगुवाई में रेल फुट ओवरब्रिज का विस्तार कराने बारे ज्ञापन सौंपा। यह जानकारी देते हुए महापंचायत संयोजक रोहतास वर्मा ने दी। इस मौके पर महासचिव रामसिंह वैध, रोहतास वर्मा, संयोजक, रमेश वर्मा पूर्व कोषाध्यक्ष, कुलदीप सिंह उप प्रधान,इंद्र सिंह लांबा सचिव शामिल रहे।

चालक व परिचालकों की गृह जिले में करें नियुक्ति

भिवानी। हरियाणा रोडवेज वर्कर्स यूनियन संबंधित सर्व कर्मचारी संघ की बैठक शनिवार को बस स्टैंड स्थित यूनियन कार्यालय में हुई। इस दौरान यूनियन के राज्य प्रधान नरेंद्र दिनोद व राज्य महासचिव सुमेर सिवाच, प्रदेश उपमहासचिव पवन शर्मा मौजूद रहे। कर्मचारी नेताओं ने बताया कि हरियाणा सरकार व परिवहन विभाग के उच्च अधिकारियों के साथ कई दौर कि बातचीत में विभाग के कर्मचारियों की बनाई तबादला नीति खामियों पर यूनियन लिखित आपत्ति जताते हुए तबादला नीति रद करने और सरकार से चालक परिचालकों की उनके गृह जिलों में नियुक्ति करने की मांग करती है।

राष्ट्रीय सैनी प्रतिभा सम्मान समारोह आज रोहतक में

भिवानी। सैनी टीम महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक एवं सहयोगी संस्था अंतरराष्ट्रीय सैनी समाज दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय सैनी प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन 20 जुलाई रविवार को रोहतक की सैनी धर्मशाला में किया जाएगा। यह जानकारी कार्यकर्ता सुरेश सैनी ने दी।

मेरिट हासिल करने वाले होनहार होंगे सम्मानित

लोहारू। दसवीं और 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में मेरिट में स्थान हासिल करने वाले विद्यार्थियों को प्रयास एक कोशिश सामाजिक संगठन एक बार फिर सम्मान करेगा। 20 जुलाई को स्थानीय अनाज मंडी परिसर में आयोजित होने वाली इस 7वें सम्मान समारोह में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ पवन शर्मा बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करेंगे और 80 फीसदी से अधिक अंक अर्जित करने वाले राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को सम्मानित करेंगे।

नशा हमें हर प्रकार से नुकसान पहुंचाता: संजय

भिवानी। वीर शहीद शीशपाल सीनियर सेकेंडरी स्कूल बजीणा में नोडल अधिकारी संजय ने स्कूली छात्र-छात्राओं को नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई। अधिकारी ने बच्चों को नशे से होने नुकसान के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि नशा किसी भी प्रकार का हो, हमें हर प्रकार से नुकसान पहुंचाता है।

रेलवे स्टेशन के नवीनीकरण से यात्रियों को होगा सीधा फायदा

भिवानी का रेलवे स्टेशन स्वर्गीय चौधरी बंसीलाल की देन है : किरण चौधरी

अमृत भारत योजना के तहत देश भर के 1275 रेलवे स्टेशनों का हो रहा है नवीनीकरण व सौंदर्यकरण, राज्यसभा सांसद किरण चौधरी ने रेलवे स्टेशन पर किए जा रहे नवीनीकरण व सौंदर्यकरण कार्य का किया निरीक्षण

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। रेलवे स्टेशन का निरीक्षण करती सांसद किरण चौधरी।

भिवानी। पाथरवाली में अनेक योजनाओं का शुभारंभ करवाती सासंद किरण चौधरी।

स्टेशन क्षेत्र के लोगों के लिए बहुत बड़ी सुविधा

सांसद किरण चौधरी ने कहा कि चौधरी बंसीलाल ने अपने रेलवे मंत्री के कार्यकाल के दौरान भिवानी के रेलवे स्टेशन का निर्माण करवाया था और उस समय यह ऐसा इलाका था, जहां पर किसी प्रकार की सुविधा नहीं थी। आज इस रेलवे स्टेशन ने एक बड़ा और भव्य रूप लिया है। यह क्षेत्र के लोगों के लिए बहुत बड़ी सुविधा है। यह सब चौधरी बंसीलाल की दूरगामी सोच का परिणाम है। इस दौरान हरि सिंह सांगवान, भाजपा जिला अध्यक्ष अध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक, अमर सिंह हालुवासिया, दिलबाग निमड़ी, प्रदीप गोलागढ़, परमजीत मदू , रमेश पचेरवाल, पार्षद अंकुर कौशिक जयवीर रंगा, डॉ जय सिंह, राजकुमार जांगड़ा और रविंद्र खरे के अलावा रेलवे से सीनियर डीसीएम भूपेश यादव, स्टेशन अधीक्षक उदय राज, यात्री सुविधा प्रबंधक दीपक कुमार और सीएमआई गौतम जांगड़ा तथा अनेक गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

सांसद ने दी विकास परियोजनाओं की सौगात

राज्यसभा सांसद किरण चौधरी ने शनिवार को गांव पाथरवाली में करोड़ों रूपयों की विकास योजनाओं की सौगात दी। उन्होंने गांव में आयोजित भव्य कार्यक्रम के दौरान विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास कर ग्रामीणों को एक नई उम्मीद और विकास का भरोसा दिया। इस मौके पर राज्यसभा सांसद किरण चौधरी ने गांव में सामुदायिक हॉल, पक्की गलियों, व्यायामशाला, आधुनिक लाइब्रेरी, वॉटर टैंक सहित कई महत्वपूर्ण विकास कार्यों की आधारशिला रखी। इन परियोजनाओं से ग्रामीणों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी और गांव की तस्वीर भी बदलेगी। इस अवसर पर शीशराम चेयरमैन प्रदीप गोलागढ़, सुनील शास्त्री, सियाराम शर्मा, राजेश भारद्वाज, रामचंद्र शर्मा, कपिल अत्री, सुरेश शास्त्री, रामप्रसाद, मुकेश शर्मा, हेमंत टिटानी सहित अनेक ग्रामीण मौजूद रहे।

राज्यसभा सांसद किरण चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू की गई अमृत भारत योजना अनूठी योजना है, जिसके तहत देशभर के 1275 प्रमुख रेलवे स्टेशनों का नवीनीकरण और सौंदर्यकरण किया जा रहा है। इससे भारतीय रेल सेवा में सफर करने वाले यात्रियों को रेलवे स्टेशनों पर आधुनिक सुविधा मिलेंगी।

उन्होंने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि भिवानी का रेलवे स्टेशन अमृत भारत योजना के तहत शामिल किया गया है। राज्यसभा सांसद शनिवार को अमृत भारतीय योजना के तहत भिवानी के रेलवे स्टेशन के नवीनीकरण कार्य का निरीक्षण कर रहीं थी। उन्होंने कहा कि भिवानी के रेलवे स्टेशन के नवीनीकरण और सौंदर्यकरण से भिवानी के लोगों को सीधा फायदा होगा। रेलगाड़ियों के ठहराव के दौरान अन्य प्रदेशों के यात्री यहां पर बेहतरीन सेवाओं का लाभ ले सकेंगे। उन्होंने कहा कि रेलवे स्टेशन की शोभा देखते ही बन रही है। मुख्य प्रवेश द्वार को भव्य बनाया गया है, जो लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। इसी प्रकार से वाहनों की पार्किंग के लिए पर्याप्त स्टैंड बनाया गया है, जहां पर लोग आसानी से अपने वाहन को खड़ा कर सकते हैं। रेलवे स्टेशन पर फुट ओवर ब्रिज का निर्माण भी किया जा रहा है, जिससे लोगों को दूसरे प्लेटफार्म पर जाने में किसी प्रकार की परेशानी नहीं होगी। उन्होंने ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी बहुत ही दूरदर्शी सोच के धनी हैं।

भिवानी। सांसद किरण चौधरी को ज्ञापन सौंपते जनसंघर्ष समिति के सदस्य।

जनसंघर्ष समिति ने राज्यसभा सांसद किरण को सौंपा ज्ञापन

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

- हिसार-दिल्ली व किसान एक्सप्रेस का हॉल्ट भिवानी जंक्शन पर करने की मांग
- भिवानी जंक्शन पर पहले की तरह इन गाड़ियों का आना बहुत ही आवश्यक: ओमप्रकाश

जनसंघर्ष समिति ने गाड़ी नंबर-54423 हिसार दिल्ली एक्सप्रेस व गाड़ी नंबर-14732 किसान एक्सप्रेस पहले की तरह भिवानी जंक्शन से संचालित करवाने व हॉल्ट करवाने की मांग को लेकर शनिवार को भिवानी पहुंची राज्यसभा सांसद किरण चौधरी को ज्ञापन सौंपा।

गौरतलब है कि राज्यसभा सांसद किरण चौधरी भिवानी रेलवे जंक्शन पर परियोजना का शुभारंभ करने पहुंची थी। जनसंघर्ष समिति के संयोजक व माकपा नेता कामरेड ओमप्रकाश व दलित अधिकार मंच के जिला संयोजक सुखदेव पालुवास ने किरण चौधरी को ज्ञापन देते हुए बताया कि उन्होंने इन दोनों गाड़ियों का हॉल्ट (रोकना) भिवानी जंक्शन पर पूर्व की तरह करवाने के लिए 18 फरवरी 2025 को भी रेलव महाप्रबंधक को ज्ञापन सौंपा था, लेकिन दुर्भाग्यवश अभी तक उस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। उन्होंने कहा कि शहर व गांव से सैंकड़ों की संख्या में प्रतिदिन दिल्ली व रोहतक जाने वाले नागरिक सीधे भिवानी रेल जंक्शन पर आते है। सिटी स्टेशन पर जाने में समय भी ज्यादा लगता है तथा परेशानी भी ज्यादा होती है, क्योंकि पूरे शहर में यात्रियों का आवागमन मुख्य स्टेशन जंक्शन पर ही होता है, यहां टिकट लेने व गाड़ी में बैठने की उचित सुविधाएं है। उन्होंने कहा कि सिटी स्टेशन के नजदीक दो बड़े सैक्टर 13 व 23 पड़ते है, इसलिए इन गाड़ियों का सिटी स्टेशन पर भी दो मिनट के लिए ठहराव हो जाए तो और भी ज्यादा शहर के यात्रियों को सुविधा हो जाएगी, लेकिन भिवानी जंक्शन पर पहले की तरह इन गाड़ियों का आना बहुत ही आवश्यक है। इन गाड़ियों के माध्यम से हजारों दैनिक यात्री सर्विस करने जाते हैं तथा छोटे व मध्यम दुकानदार रोजाना दिल्ली से सामान खरीदने व अन्य समस्यायों के समाधान को रोहतक व दिल्ली आते-जाते हैं ।

अतिक्रमण हटवाने को दिया समय

- हजारों कांवड़ियों के सहयोग में ग्राम पंचायत ढिगावा जाटान ने चलाया है अभियान

हरिभूमि न्यूज ⏭ढिगावा मंडी

कांवड़ यात्रा शुरू हो गई है। जिलेभर में सड़क किनारे शिव भक्तों का स्वागत करने के लिए शिविर भी सज रहे हैं, लेकिन कांवड़ियों का सफर आसान नहीं दिख रहा है। खासतौर पर दिल्ली पिलानी नेशनल हाईवे 709 ई पर यहां से हरियाणा के साथ-साथ राजस्थान की ओर जाने वाले हजारों कांवड़ियों का दबाव रहता है। जिसको देखते हुए ग्राम पंचायत ढिगावा जाटान ने नेशनल हाईवे 709ई पर ढिगावा मंडी के आस पास रोड के किनारो पर बड़ी गंदगी और अतिक्रमण हटाने में जुट गई है। इसके साथ ही मंडी बाजार में नेशनल हाईवे के दोनों तरफ अतिक्रमण हटवाने के लिए प्रशासन को दो दिन का समय भी दिया है। बता दें की शनिवार सुबह सरपंच धर्मवीर सिंह नेहरा ने मंडी बाजार और नेशनल हाईवे और उन रास्तों का मुआइना किया, जिनसे होकर कांवड़िए गुजरते हैं। इन रास्तों पर कदम-कदम पर खामियां नजर आईं। सरपंच धर्मवीर सिंह नेहरा ने बताया कि दिल्ली पिलानी नेशनल हाईवे 709 ई से हरियाणा और राजस्थान के ज्यादातर कांवड़िए गुजरते हैं। इस हाइवे पर जगह-जगह कांवड़ियों के लिए टेंट आदि की व्यवस्था की जा रही थी, लेकिन ढिगावा मंडी बाजार मे सड़क पर अतिक्रमण की स्थिति भी विकराल है। जिसको लेकर हमने प्रशासन को दो दिन में अतिक्रमण हटवाने को कहा है। वही हाईवे के दोनों तरफ से गंदगी और पत्थर उठाने के लिए मैंने जेसीबी की व्यवस्था कर लगा दी है ताकि जल्दी से जल्दी रोड को साफ किया जा सके।

पेयजल के लिए लाम्बा के लोगों ने लगाया जाम

- दादरी रोहतक रोड को एक घंटे रखा जाम, एसडीओ ने दिया आश्वासन

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

चरखी दादरी। पेयजल किल्लत को लेकर सड़क पर विरोध जताते ग्रामीण।

लंबे समय से पेयजल किल्लत का त्रस्त लाम्बा गांव के ग्रामीणों का सब्र शनिवार को जवाब दे गया। सुबह सरपंच अनिल कुमार के नेतृत्व में ग्रामीणों ने दादरी रोहतक रोड पर जाम लगाकर सरकार व प्रशासन के खिलाफ हल्ला बोला।

मुख्य रोड पर एक घंटे तक जाम लगने से वाहनों की कई किलोमीटर तक लाइन लग गई। सूचना के बाद एडीओ ने मौके पर पहुंचकर ग्रामीणों को जल्द पानी सप्लाई देने का आश्वासन देकर जाम खुलवाया। शनिवार सुबह पेयजल किल्लत को लांबा गांव के सैकड़ों ग्रामीण सरपंच अनिल कुमार की अध्यक्षता में एकत्रित हुए। इसके बाद खुद सरपंच ग्रामीणों के साथ सड़क पर बैठ गए। ग्रामीणों ने बताया कि पिछले लंबे समय से गांव में पानी का संकट बना हुआ है। नहरी ने पानी आने व अच्छी बारिश के बाद भी जलघर का टैंक सूखा पड़ा है।

गांव एक माह से सप्लाई नहीं मिली। अधिकारियों के पास दर्जनों चक्कर लगाने के बाद भी जलघर का टैंक सूखा रह गया। इसके बाद विधायक को गुहार लगाई, लेकिन वहां भी सुनवाई नहीं हुई।

सरपंच बैठे रोड के बीच

ग्रामीणों की समस्या को देखते हुए लांबा गांव के सरपंच अनिल कुमार खुद रोड के बीच बैठ गए। सरपंच ने कहा कि विधायक के पास पानी की समस्या लेकर गए तो उनका जवाब भी संतोषजनक नहीं था। वहीं अधिकारी किसी की सुनवाई नहीं करते, जिसके चलते ग्रामीण बहुत परेशान हैं।

टेल तक नहीं पहुंचता पानी

ग्रामीणों ने बताया कि माइनर का पानी उनके गांव तक नहीं पहुंचता। एक तो डिमांड के हिसाब से पानी नहीं मिलता दूसरा खेतों में पानी की चोरी होने से उनका जलघर खाली रहता है। उन्होंने कहा कि अधिकारी उनकी समस्या को गंभीरता से नहीं लेते, जिसकारण उन्हें रोड पर उतरना पड़ा।

मार्केट न्यूज

भिवानी में मुरली स्वीट्स के घेवर और फिरनी की धूम

भिवानी। तीज और रक्षाबंधन जैसे पारंपरिक त्योहार नजदीक आते ही लोगों की जुबां पर घेवर और फिरनी का स्वाद ताजा हो जाता है। ऐसे में मुरली स्वीट्स की खास मिठाइयों की मांग पूरे क्षेत्र में चरम पर पहुंच गई है। भिवानी शहर ही नहीं आसपास के क्षेत्रों में भी मुरली स्वीट्स का घेवर और फिरनी विशेष लोकप्रियता रखते हैं। फिलहाल मुरली स्वीट्स पर घेवर की प्रीमियम वैरायटी - प्रीमियम घेवर, मलाई घेवर, मिनी घेवर, रबड़ी घेवर उपलब्ध है। वहीं फिरनी भी सादाफिनी और केसर वाली दो स्वादों में ग्राहकों को आकर्षित कर रही है। इन मिठाइयों की खास बात इनका शुद्ध देसी घी में निर्मित होना और मुंह में घुल जाने वाली मिठास है। मुरली स्वीट्स न केवल मिठाइयों के लिए प्रसिद्ध है बल्कि यहां शादियों की भाजी भी बेहतरीन वैरायटी में मिलती है। साथ ही मोटी बूंदी लड्डू, मोतीचूर लड्डू, पेड़ा, चूरमा और छप्पन भोग सवामणि का प्रसाद भी ग्राहकों को खूब भा रहा है। संस्थान का उद्देश्य ग्राहकों को शुद्धता, स्वाद और गुणवत्ता से भरपूर उत्पाद उचित मूल्य और आकर्षक पैकिंग के साथ उपलब्ध कराना है, जो हर बार त्योहार को और भी खास बना देता है।

आज सम्मानित होंगे योग साधक

- करो योग रहो निरोग के संदेश के साथ दक्षिण काली मंदिर में कक्षा का सफल आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

मिनी बाइपास स्थित दक्षिण काली नवदुर्गा मंदिर में नवदुर्गा सेवा सहयोग संस्था द्वारा 21 दिवसीय निःशुल्क योग प्रशिक्षण शिविर का सफल आयोजन किया। यह योग कक्षा प्रतिदिन प्रातः 5 बजे से 6:30 बजे तक हुई, जिसमें महिला, पुरुष एवं युवा योग साधकों ने भाग लिया। 21 दिवसीय योग कक्षा में भाग लेने वाले सभी योग साधकों को रविवार को सम्मानित किया जाएगा। मंदिर प्रबंधक उर्मिला सैनी ने बताया कि संस्था का उद्देश्य समाज में शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना है।

भिवानी। योगाभ्यास करते साधक। फोटो: हरिभूमि

योगाचार्य जेई बिजेश जावला ने योग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नियमित योग अभ्यास से शरीर में लचीलापन आता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है उन्होंने 'करो योग, रहो निरोग' के मूलमंत्र के साथ शिविर आयोजित किया। भविष्य में भी ये योग कक्षा प्रतिदिन जारी रहेगी। योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि यह जीवन जीने की कला है। इस शिविर में अनुलोम-विलोम, कपालभाति, सूर्य नमस्कार, ताड़ासन, वृक्षासन, भुजंगासन और त्रिकोणासन जैसे प्रमुख आसनों का अभ्यास करवाया। योग कक्षा में क्षेत्रवासियों एवं संस्था के सदस्यों की उपस्थिति में साधकों का उत्साहवर्धन किया।

मार्केट न्यूज

एमके हॉस्पिटल में मैमोग्राफी एवं कैंसर जांच शिविर का सफल आयोजन

भिवानी। महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने और प्रारंभिक स्तन कैंसर की पहचान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एमके हॉस्पिटल, भिवानी में एक निःशुल्क मैमोग्राफी एवं कैंसर जांच शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। यह शिविर 19 जुलाई को सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक आयोजित हुआ। इस शिविर में न केवल महिलाओं की, बल्कि पुरुषों की कैंसर जांच भी की गई और उन्हें कैंसर से संबंधित आवश्यक निःशुल्क परामर्श प्रदान किया गया। शिविर का उद्देश्य आमजन को कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के प्रति अधिक जागरूक करना और समय रहते इलाज के प्रति सजग बनाना था। एमके हॉस्पिटल, भिवानी का यह गौरव है कि यह शहर का एकमात्र ऐसा अस्पताल है जहाँ मैमोग्राफी जांच की सुविधा उपलब्ध है, जिससे महिलाओं को प्रारंभिक स्तन कैंसर की पहचान और समय पर उपचार की सुविधा मिलती है। शिविर में बड़ी संख्या में महिलाओं एवं पुरुषों ने भाग लिया, और विशेषज्ञ डॉक्टरों से निशुल्क परामर्श प्राप्त किया।

राजकीय कन्या महाविद्यालय में लगाई प्रदर्शनी

देश की जनता आपातकाल को नहीं भूल सकती

- विधायक कपूर वाल्मीकि ने किया प्रदर्शनी का उद्घाटन

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा। प्रदर्शनी का अवलोकन करते विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि।

विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि ने कहा कि आपातकाल के दौरान देशवासियों ने अनेक तरह की यातनाएं और अत्याचार झेला। आपातकाल की हकीकत के बारे में नागरिकों को अंधकार में रखा गया है। विशेष कर युवा पीढ़ी को आपातकाल के दौर की सच्चाई के बारे में पता होना जरूरी है। विधायक श्री वाल्मीकि शनिवार को संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशानुसार सूचना, जनसंपर्क, भाषा एवं संस्कृति विभाग द्वारा बवानी खेड़ा कस्बा में स्थित राजकीय कन्या महाविद्यालय में संविधान हत्या दिवस के बारे में जन जागरूकता को लेकर लगाई गई प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए अपना संदेश दे रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाने में लाखों लोगों ने अपनी जान की बाजी लगाई। देश संवैधानिक व्यवस्था से चलता है, लेकिन तत्कालीन सरकार ने देश आपातकाल लगाया। आपातकाल लागू करना एक काला अध्याय रहा है, जिसे देश की जनता कभी नहीं भूल सकती। इस दौरान असंख्य लोगों को जेलों में डाला गया। तत्कालीन सरकार ने तानाशाही रवैया अपनाकर देशभक्तों की आवाज को बंद किया गया। इतना ही नहीं लोकतंत्र के चौथा स्तक्वब माने जाने वाले मीडिया का भी एक तरह से गला घोंटा गया।

ये दर्शाया गया है प्रदर्शनी में

आपात काल प्रदर्शनी में आपातकाल के 50 साल पूर्ण होने पर भारतीय लोकतंत्र का काला अध्याय मनाए जाने, जयप्रकाश नारायण द्वारा दिल्ली के रामलीला मैदान में एक विशाल रैली करने, 26 जून 1975 की सुबह लोगों को समाचार पत्रों के माध्यम से आपातकाल लागू होने की सूचना मिली, न्यायालय के संकट में होने, जबरन नसबंदी, पुरानी दिल्ली में तुर्कमान गेट पर झुग्गियों पर कार्रवाई, मौलिक अधिकार निलंबित, बेकसूर लोगों की गिरफ्तारी, समाचार पत्रों पर सेंसरशिप आदि दर्शाया गया है। प्रदर्शनी में लोकनायक जयप्रकाश नारायण को 130 दिन जेल में डालना, अटल बिहारी वाजपेयी को बेंगलुरु जेल में बंद कर देना, जेल में बंदे रहते हुए वाजपेयी द्वारा कविताएं लिखना, वरिष्ठ नेता चंद्रशेखर, लालकृष्ण आडवाणी, जॉर्ज फर्नांडिस और कन्नड़ अभिनेत्री स्नेहलता रेड्डी की गिरफ्तारी को भी दर्शाया गया है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
आवश्यकता है
भारत के तेजी से बढ़ते हिन्दी समाचार-पत्र हरिभूमि को भिवानी शहर में डोर-टू-डोर मार्केटिंग के लिए उत्साही, योग्य व आकर्षक व्यक्तित्व वाले युवक-युवतियों की आवश्यकता है, जो मीडिया के क्षेत्र में कैरियर बनाना चाहते हैं

आयु : 18 से 30 वर्ष तक
योग्यता : 10+2 या इससे अधिक
वेतन : योग्यतानुसार (वेतन बुकिंग अनुसार)
मिलने का समय : प्रातः 11.00 से सायं 5.00 बजे तक (कार्यदिवस को)
अपना बायोडाटा मोबाइल नं. 9253681005 पर व्हट्सअप करें या hbcircurtk@gmail.com मेल करें।
सम्पर्क करें :- हरिभूमि कार्यालय
शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 20 जुलाई 2025

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

कभी-कभी बन जाएं बच्चे
जी भर करें लाइफ एंज्वॉय

जीवन में सबसे सुहाने दिन बचपन के ही होते हैं। उस दौर से जुड़ी यादें हम कभी नहीं भूल पाते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि हम बड़े हो गए तो अब बच्चों जैसी हरकतें नहीं कर सकते। जब भी मौका मिले, कुछ पल के लिए ही सही फिर से बच्चा बनकर देखिए, आपका तनाव गायब हो जाएगा और लाइफ को भरपूर एंज्वॉय कर पाएंगे।

अपनी जिंदगी में रोजमर्रा की जिम्मेदारियों के बोझ से व्यथित होकर अकसर हम अपने बचपन के दिनों की मस्ती, बेपरवाही और उन दिनों से जुड़ी कुछ खास बातों को याद करके उदास हो जाते हैं और अनायास ही बोल पड़ते हैं, *बचपन के दिन भी क्या दिन थे, उड़ते फिरते थे तितली बन।* कई बार मन में ऐसा भी खयाल आता है कि सब के सपनों को साकार करने में, दुनिया की उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश में, कितना थक जाते हैं हम। हम सोचने लगते हैं कि काश, फिर से वो बेफिक्री आ जाए, जो बचपन के दिनों में हुआ करती थी। वाल्ट डिजनी ने कहा था, 'इस दुनिया की मुश्किल यह है कि बहुत सारे लोग बड़े हो गए हैं।'

नहीं भूलते वो मस्ती भरे दिन

इस दुनिया में शायद ही कोई शख्स होगा, जो अपने बचपन के दिनों में लौट जाने की ख्वाहिश ना रखता हो, जब जिम्मेदारियां कम थीं और खुशियां बेशुमार। होमवर्क को झटपट पूरा किया और घर से बाहर निकल गए कॉलोनी के पार्क में, मकान की छत पर या अपनी बालकनी में। कभी मिट्टी में लथपथ हुए, तो कभी बारिश के पानी में भीगे। बाजार से गेंद नहीं ला पाए तो रद्दी कागजों का गोला बनाकर खेलने लगे। महंगे खिलौने ना हों तो कागज की नाव या पतंग ही सही। बस मस्ती चाहिए थी, हर कीमत पर।

करें ऐसा, जिसमें आए मजा

आप चाहें तो आज अपने बचपन वाली उम्र भले वापस ना ला सकें, लेकिन 40, 50, 60 साल के होने के बावजूद दिल बचपन का ला सकते हैं। इससे न सिर्फ आपको अनूठी खुशी मिलेगी बल्कि स्ट्रेस लेवल भी कम होगा। याद कीजिए बचपन में हम कितने क्रिएटिव होते थे। हमारे पास हर चीज का विकल्प था। माचिस की बेकार डिब्बियों से टीवी जैसी आकृति बना लेते थे। अखबारों या पत्रिकाओं से कटी तस्वीरों को एक के बाद एक चिपका कर लंबा करना फिर उनके दोनों सिरे पर 2 तिनकों में लपेटना। फिर डिब्बी बीच से काटकर स्क्रीन बनाकर तिनके घुमाते हुए अलग-अलग तस्वीरें देखना। एक रुपए के लट्टू या 2 रुपए की गेंद से दिनभर खेलना, मस्ती करना। कागज की नाव बनाकर उसे बरसात के पानी में चलाना। चित्रकारी, डांस, कॉमिक्स पढ़ना, किसी गीत की पैरोडी बनाकर उसे गुनगुनाना हमें कितना प्रफुल्लित करता था। अब भी क्या बिगड़ा है! अब भी आप ऐसी क्रिएटिव एक्टिविटी अपनाएं, जो आपको खुशी दे। कुकिंग, डांसिंग, सिंगिंग, ड्राइंग कुछ भी कीजिए ताकि कुछ देर अपनी जिम्मेदारियों को भूल कर उसमें व्यस्त हो जाएं।

याद करिए गुजरे हुए दिन

किसी ने कहा है, *टूटे बर्तन को खिलौना बना लेते हैं, हम बच्चे हैं हर जगह आशियाना बना लेते हैं।* अगर इसी सिद्धांत पर आज भी चलें तो आप खूब खुश रहेंगे। अगर आप संयोगवश अभी उसी शहर में रहते हैं, जहां आपका जन्म हुआ और बचपन बीता तो कभी उस गली या मोहल्ले में जाइए, जहां आपने बचपन बिताया और उन दिनों को शिद्दत से याद कीजिए। उस मकान के अड़ोस-पड़ोस में रहने वाले लोगों से मिलिए, जहां आप रहते थे। उनसे खूब गपशप कीजिए। अगर आपका शहर बदल गया है तो आप गूगल की मदद से उस मोहल्ले, पार्क या स्कूल को देख सकते हैं, जहां आपने बचपन बिताया था, या फिर फेसबुक के माध्यम से अपने बचपन के दोस्तों को ढूंढ़ कर उनसे बातचीत कर सकते हैं। आपके पास बचपन की तस्वीरों का एल्बम हो तो उन तस्वीरों को देखिए और एक-एक तस्वीर से जुड़ी बातें याद कीजिए। वही वाली टॉफी खरीदकर फिर से खाइए, जो आपको खूब पसंद हुआ करती थी। उस मिठाई की दुकान पर जाकर समोसा या कचौरी खाइए, जहां के समोसे, कचौरी आप बचपने में बड़े चाव से खाते थे। आप कुछ देर के लिए ही सही अपने बचपन में पहुंच जाएंगे। यकीन मानिए, किसी की लिखी ये पंक्तियां आपको बरबस याद आ जाएंगी कि *नंगे पांव दौड़ते थे उस बचपन में। बढ़ते तजुर्बे ने पैरों में चुभन का एहसास करा दिया।*

खूब लें राइडिंग का मजा

अपने बचपन को लौटाने के लिए, उन पलों को फिर से जीने के लिए आज के जमाने में बेस्ट प्लेस हैं एम्यूजमेंट पार्क। एम्यूजमेंट पार्क में छोटे बच्चों को खेलते देखकर आपको अपना बचपन याद आ जाएगा। फिर तरह-तरह के राइड्स का आनंद लेना, वहां घूमना-फिरना और मस्ती करना आपके अंतर्मन को पूरी तरह खुश कर देगा। जब मौका मिले, आप ऐसी जगहों पर जरूर जाएं और राइड्स के साथ-साथ वहां मिलने वाले डिफरेंट फूड्स एंज्वॉय करना ना भूलें।

बचकानी हरकतों से ना झिझकें

किसी ने क्या खूब लिखा है, *झूठ बोलते थे फिर भी कितने सच्चे थे हम। यह उन दिनों की बात है जब बच्चे थे हम।* आपने देखा होगा कि बच्चों को जो पसंद आता है, वे उसे पूरी मस्ती के साथ करते हैं। चाहे खेलना-कूदना हो, गाना हो या नाचना हो। उन्हें इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं रहती कि कोई क्या सोचेगा या क्या कहेगा? उनका पूरा ध्यान सिर्फ अपनी खुशी और मस्ती में होता है। आपको भी बिल्कुल वही बेपरवाही अपनानी होगी। अपने हमउम्र दोस्तों के साथ ठहाके मारकर हंसना, चुटकुले सुनाना, डांस करना या जो अच्छा लगता हो करें। यकीन मानिए आप अपनी उम्र काफी कम महसूस करने लगेंगे। इस बारे में मनोचिकित्सक डॉक्टर संजय गर्ग कहते हैं, 'हम वयस्क होकर भी बच्चों जैसी मस्ती कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए बनावटी कंफर्ट जोन से बाहर आकर रियल कंफर्ट जोन में जाने के लिए मेंटली प्रिपेयर होना पड़ेगा।' *

लाइफस्टाइल / अंजू जैन

कुछ लोगों की आदत होती है कि वे हर छोटी-बड़ी बात पर जरूरत से ज्यादा सोच-विचार यानी ओवर थिंकिंग करते हैं। इससे वे कोई भी निर्णय जल्द नहीं ले पाते हैं। अगर आप भी ऐसी समस्या से ग्रस्त हैं तो यहां बताए जा रहे उपायों को आजमा सकते हैं।

क्या आप भी करते रहते हैं
हर बात पर ओवर थिंकिंग

यह सही है कि कोई भी काम अच्छी तरह सोच-विचार कर करना चाहिए। विचारशीलता और मनन करना अच्छी बात है। लेकिन जब आपका चिंतन, मनन या विचार मंथन जरूरत से ज्यादा समय तक या ज्यादा मात्रा में होने लगता है तो यह अनायास ही चिंता और ओवर थिंकिंग की आदत में तब्दील हो जाता है, जो लाइफस्टाइल को प्रभावित कर सकता है। इसलिए इस हैबिट से उबरने के लिए यहां बताई जा रही बातों पर अमल करें।

दूसरों पर ध्यान न लगाएं: हमारा मन अकसर बाहरी कारकों पर ध्यान केंद्रित करने पर उलझा रहता है। जब हम ईर्ष्या, दूसरों द्वारा हमारी आलोचना, दूसरों की सुख-समृद्धि पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो हमारा मन अस्थिर और अशांत हो जाता है। इसलिए बेहतर होगा कि हमारी सोच और चिंतन का दायरा उन्हीं चीजों तक सीमित हो, जिन्हें हम सुधार, बदल या नियंत्रित कर सकते हैं। पुस्तक 'हेवनॉट गॉट टाइम फॉर द पेन' में लिखा गया है कि आपको अपने उलझे हुए विचारों को बदलना और उनका समाधान करना सीखना चाहिए। सबसे पहले जानिए कौन से विचार आपको पीड़ा देते हैं? उन विचारों को छोड़ने की कोशिश करें। ज्यादा सोचने से चीजें उलझ जाती हैं। इसलिए जीवन जीने और सोचने की प्रक्रिया को सरल रखें।

धैर्य बनाए रखें: यह एक मूलभूत सिद्धांत है कि आप जो अभी बोएंगे उसकी फसल आप बाद में काट पाएंगे। लेकिन हमारा चंचल स्वभाव इस बात को मानता नहीं और वह तुरंत परिणाम न मिलने पर विचलित हो जाता है। अपनी मेहनत के परिणाम के लिए जरा सा धैर्य रखिए फिर भी वांछित नतीजा ना मिले तो उस पर पुनर्विचार करिए।

भाग्य को न कोसें: मुश्किल परिस्थितियों में मनुष्य भाग्य को दोष देता है। लेकिन उसका भाग्य अधिकांशतः उसके चरित्र, जुनून, गलतियों और कमजोरी का ही प्रतिबिंब होता है। उसे अपने अवसरों से संतुष्ट रहना चाहिए और उनका फायदा उठाने की युक्ति पर विचार करते हुए स्वयं को बेहतर करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

परफेक्शन की जिद छोड़ें: कई लोग पूर्णतावाद के शिकार होते हैं। वह किसी काम को करने के बाद भी बार-बार सोचते हैं कि इसे और कैसे बेहतर किया जाए? अगर आपकी भी यह समस्या है तो इससे उबरें। एक काम के बाद अपनी अगली प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करें।

टू द पॉइंट सोचें: आप क्या सोच रहे हैं, क्यों सोच रहे हैं और किन मूल बिंदुओं पर आपका चिंतन है, यह पूरी तरह स्पष्ट होना चाहिए। इसके लिए बिंदुओं को लिख लीजिए। विभिन्न पहलुओं पर गौर कीजिए और फिर सोचिए। ऐसी सोच आपको निर्णय लेने में मददगार होगी और समय भी नष्ट नहीं होगा।

अनुभवी लोगों से मिलें: विचार मंथन की प्रक्रिया अगर लंबी खिंच रही हो और आप किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पा रहे हों तो अनुभवी व्यक्तियों से सलाह लें। कुछ परिस्थितियों में सबसे अच्छा यह होता है कि आप अपनी गट फीलिंग का उपयोग करें। आपका अंतर्मन यानी सिक्स्थ सेंस जो कहे उसे ही सही मानें। कई शोध हो चुके हैं, जिनसे पता चलता है कि गट फीलिंग और लॉजिकल सोच का संयोजन सही निर्णय लेने में मददगार होता है।

मन को थकाने से बचें: आपको हर दिन छोटे-बड़े सैकड़ों निर्णय लेने होते हैं, जो आपके मन को थका सकते हैं। ऐसे में बहुत जरूरी है कि अपने दिमाग की शक्ति को बचाने के लिए एक दिनचर्या बनाएं, जिसमें उलझे हुए विषयों पर विचार के लिए एक वक्त तय कर दें। इसी समय जरूरी बातों पर निर्णय लें। बेवजह विचारों के सागर में डूबे रहना समय और ऊर्जा की बर्बादी है। इसकी बजाय सकारात्मक सोच के बीज बोएं और जरूरी चीजों पर विचार करें। पुस्तक 'डेवलपिंग इन टू, हेल्दी थिंकर्स' में कहा गया है कि सकारात्मक वाक्य हमें एक खुशहाल और भयमुक्त जीवन बनाने में प्रभावशाली रूप से मदद करते हैं। अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सूक्तियां चुनें या अपने प्रेरक वाक्यांश बनाएं और उन पर अमल करें।

समय पर छोड़ दें: अगर आप यह सोचकर चिंतित रहते हैं कि पता नहीं कोई समस्या सुलझेगी या नहीं, तो याद करें अतीत में आपने कितनी ही समस्याओं को सुलझाया है। इससे आपकी थिंकिंग पॉजिटिव साइड में चली जाएगी। इसके साथ ही आपको यह भी याद रखना चाहिए कि कई समस्याएं तो समय के साथ सुलझ जाती हैं। ओवर थिंकिंग से बचने का सबसे आसान तरीका पुस्तक 'स्टॉप लुक एंड लिसन' में बताया गया है। इस पुस्तक में विस्तार से समझाया गया है कि आप वर्तमान में जिएं और उस क्षण को पूरी तरह महसूस करें। जिंदगी को एक तय उद्देश्य के साथ आगे बढ़ाएं। कर्म पर विश्वास करें और अपनी मानसिक स्थिति पर नियंत्रण रखें। *

सजेशन
मोनिका शर्मा

स्मार्ट गैजेट्स से दूर रहकर भी
मिल सकती है खुशी-सुकून

हालांकि आज के दौर में स्मार्ट गैजेट्स से पूरी तरह दूर रहना तो संभव नहीं रह गया है। लेकिन अगर केवल इस पर इंटरनेट यूज को कंट्रोल कर लें तो भी खुशी और सुकून हासिल कर सकते हैं।

सब कुछ पा लेने से ही सुकून नहीं मिलता। खुशी का मतलब दुनिया भर से जुड़े रहना ही नहीं होता। टेक्नीक के घेरे में घिरी आज की जिंदगी में स्मार्ट तकनीकों से लैस गैजेट्स से दूरी बनाना भी मन को सुख दे सकता है। वर्चुअल दुनिया में अनजान लोगों तक से जुड़ने और हर पल जुड़े रहने के बजाय, स्क्रीन की मौजूदगी पर लगाम लगाना भी मन को खुशी दे सकता है। टिक-टिक की आवाज पर हमारा ध्यान भटकाते नोटिफिकेशंस को बंद रखना भी मन को शांत सहज रख सकता है। कनाडा और अमेरिका में हुआ एक ताजा अध्ययन नोटिफिकेशंस की टोन पर भागते मन की लगाम थामकर असली दुनिया में सच्चे सुख को जीने की बात पुख्ता करता है।

टिक-टिक पर कंट्रोल के लाभ: बीते कुछ वर्षों में स्मार्टफोन का साथ एक आदत बन गया है। बहुत से लोगों के लिए तो स्क्रीन में झांकते रहना किसी लत से कम नहीं। वहीं इस आदत के खामियाजों को समझकर खुद को वर्चुअल व्यस्तता से बचाने के प्रयास भी खूब किए जा रहे हैं। हालांकि आज के समय में फोन एक जरूरत भी बन गया है। इससे पूरी तरह दूर रहना भी मुश्किल है। पर इसके लती बनने से तो बचा जा सकता है। अमेरिका और कनाडा की कुछ यूनिवर्सिटीज द्वारा एक महीने तक 467 आईफोन यूजर्स पर की गई एक रिसर्च इस मोर्चे पर सही और सहज राह दिखाती है। असल में इस स्टडी में शामिल होने वाले लोगों को फोन का उपयोग पूरी तरह बंद करने की बजाय इंटरनेट का इस्तेमाल न करने को कहा गया था। इन लोगों के फोन में बाकायदा एक एप डाउनलोड की गई थी, जो फोन पर मोबाइल इंटरनेट ब्लॉक करने से जुड़ी थी। अध्ययन में सामने आया कि इंटरनेट बंद रखना लोगों का फोकस बढ़ाने और दिमाग भी जवान करने में मददगार साबित हो सकता है। इतना ही नहीं कुछ दिनों तक अगर फोन में ऐसी सेटिंग रखी जाए तो मूड में भी सुधार हो सकता है। इंसान का दिमाग तो 10 साल तक जवान हो सकता है। स्पष्ट देखने में भी आ रहा है कि पल-पल मिलते नोटिफिकेशंस यूजर्स का ध्यान भटकाने और मेमोरी लॉस का कारण बन रहे हैं। ऐसे में इंटरनेट सेटिंग्स के माध्यम से टिक-टिक पर लगाम लगाने के बहुत लाभ यूजर्स को मिल सकते हैं। आम लोगों के लिए भी खुद को स्मार्ट गैजेट्स से दूर रखने के लिए कुछ समय तक मोबाइल इंटरनेट बंद रखने का यह रास्ता अपनाने योग्य है।

सेटिंग्स का खास असर: फोन की सेटिंग्स चेंज करना कोई बड़ा बदलाव प्रतीत नहीं होता पर इसका असर बहुत अहम है। एक महीने की इस रिसर्च में दो हफ्ते बाद ही लोगों पर मोबाइल इंटरनेट बंद रखने की साधारण सी सेटिंग्स का असाधारण प्रभाव दिखने लगा। अध्ययन में शामिल लोगों ने माना कि वे पहले से ज्यादा खुश हैं। साथ ही अपनी जिंदगी को लेकर उनमें संतुष्टि का भाव भी बढ़ गया है। टिक-टिक या कोई और नोटिफिकेशन टोन को बंद रखने से यूजर्स को ना केवल मानसिक तौर पर स्वस्थ महसूस हुआ बल्कि यह बेहतरी से जुड़े ये बदलाव कॉग्नेटिव बिहेवियरल थेरेपी के बराबर थे। रिसर्च में शामिल लोगों ने बताया कि फोकस्ड रहने को लेकर भी उन्होंने पॉजिटिव बदलाव महसूस किए। साथ ही अटेंशन टेस्ट में इन लोगों के दिमाग ने अपने से 10 साल जवान लोगों के बराबर परफॉर्म किया।

हर फ्रंट पर पॉजिटिव बदलाव: इस स्टडी में सामने आया कि लोगों ने फोन छोड़कर अपने से जुड़े इंसानों के साथ ज्यादा समय बिताया। अच्छे से नींद लेने और एक्सरसाइज करने पर भी ध्यान दिया। लोगों ने हर रात औसतन 17 मिनट अधिक नींद ली। इन नतीजों को देखते हुए रिसर्चर का कहना है कि स्मार्ट फोन से पूरी तरह दूरी नहीं बनाई जा सकती पर इसके इस्तेमाल में बैलेंस रखना बहुत आवश्यक है। यह बहुत व्यावहारिक सा पक्ष है कि हर पल मिलते नोटिफिकेशंस से दूर रहना मानसिक ठहराव देने का काम करता है। यह ठहराव एकाग्रता की सौगात देता है। फोकस्ड रहने वाला इंसान कामकाजी संसार में बेहतर परफॉर्म कर पाता है। *

नवगीत
माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग'

कांच के बर्तन

नहीं होते भरोसेमंद
कांच के बर्तन
करने लगते हैं हवा के
सामने नर्तन।
फिजूल दूध को खौलाते रहे
मथ डाले
निकाल लेते हैं मलाई
बेचने वाले
हक में आता है केताओं
के अब खुरचन।
सिर्फ बदली हैं तख्तियां
बदले हैं मुखड़े
नई नहीं है संरचना
बदले हैं टुकड़े
हुआ नहीं है सालों से
कोई परिवर्तन।
काटने की लगी है होड़
अंधभक्तों में
फल और फूल नहीं दिखते
अब दरख्तों में
मांगने के लिए
होता है मिथ्या अर्चन।
स्वयंभू गुरुओं के चेलों
की हैं दुकानें
बखान करते हैं बौद्धिकता
के अफसाने
अपने जैसों के आगे
करते हैं गर्जन।
घरों को लूट रहे हैं
उनके रखवाले
जुबां पे आम आदमी के
पड़े हैं ताले
असत्य बोला नहीं करते
कभी भी दरपन।

व्यंग्य/ अंशुमाली रस्तोगी

सोना और चोर

लोग सोने के महंगा होने पर, अदृश्य डर के कारण, उसे लॉकर में डलवा देते हैं, जबकि मैंने सोना घर में ही रख छोड़ा है। वो इसलिए कल को अगर चोर मेरे घर चोरी करने आता है तो उसे निराश होकर न लौटना पड़े।

सोना जब देखो तब बमचक मचाए ही रहता है। ऐसे में न खरीदने वालों के हाथ आ पाता रहा है, न चोरों के। इससे सबसे अधिक 'आर्थिक नुकसान' हमारे चोर भाइयों का होता है। बेचारे न सोना चुरा पाते हैं, न बेच। महंगे होने के कारण लोगों ने सोना पहनना भी कम कर दिया है। और घर में जो रखा होता है, उसे लॉकर में डलवा देते हैं। अब चोर किस मुंह से किसी के घर चोरी करने जाए। सोना ही एक ऐसा आइटम है, जिसे चुराकर वे अच्छी कमाई कर लेते हैं। अपना घर चला लेते हैं। लेकिन उस पर भी अकसर ही ग्रहण लग जाता है। इसलिए छिनैती की घटनाएं भी अब घट गई हैं। वरना पहले तो चेन-कुंडल खींचने की वारदातें आए दिन अखबारों में पढ़ने को मिल जाया करती थीं। महिलाएं भी बड़ी अजीब हैं। अरे, अपने लिए नहीं तो कम से कम चोरों की भलाई के लिए ही सोना पहन कर घर से बाहर निकला करें। ताकि उन बेचारों की भी दुकान चलती रहे। एक यही तो उनकी कमाई का जरिया है, उस पर भी महंगाई की मार। घोर अन्याय है चोर बिरादरी के साथ। मैं इसकी सख्त शब्दों में मजम्मत करता हूं। सरकार को इस बारे में जरूर कुछ सोच-विचार करना चाहिए।

सोने के संग समस्या यही है कि वो कब बढ़ जाता है, कुछ पता नहीं चलता। रात भर में अपना दांव खेल देता है। लोगों ने भी सोने के प्रति ना जाने क्या मोह पाल रखा है कि रोटी पानी में डुबोकर खा लेंगे, लेकिन सोना जरूर खरीदेंगे। चाहे घर में खुद के रहने के लिए जगह न हो पर सोना जरूर रखेंगे। पहनने को चाहे ढंग के कपड़े न हों पर सोना जरूर पहनेंगे। मतलब हद है। यह नहीं होता कि थोड़ा सोना चोरों को भी दे दें ताकि उनका घर-परिवार भी चलता रहे। किसी गरीब की भलाई करने में दुआएं ही मिलती हैं।

चोरी करना कितना जोखिम भरा काम है, यह तो कोई चोर से ही पूछे। किसी अनजान घर में जाकर चुराई करना, मेरे तो सोचकर ही पसीने छूट जाते हैं। यहां मैं कलम चलाकर ही खुद को ऊंचा लेखक मानता हूं। अजी, कलम का क्या है कोई भी चला सकता है। परंतु चोरी हर कोई नहीं कर सकता। इसके लिए जिगर और इच्छाशक्ति दोनों की भरपूर जरूरत होती है। कभी-कभी तो चोर मुझे, लेखकों से कहीं अधिक सरल और सच्चे जान पड़ते हैं। लेखक चूंकि बुद्धिजीवी होता है, इसलिए हर समय शब्दों-भाषा का जाल बुनता रहता है। चोर सिर्फ चोर होता है। अपने धंधे से मतलब रखता है। यहां-वहां अपनी टांग नहीं फंसाता फिरता। वो तो खामख्वाह मैं लेखक बन गया, जबकि मुझे तो चोर ही बनना चाहिए था।

लोग सोने के महंगा होने पर, अदृश्य डर के कारण, उसे लॉकर में डलवा देते हैं, जबकि मैंने सोना घर में ही रख छोड़ा है। वो इसलिए कल को अगर चोर मेरे घर चोरी करने आता है तो उसे निराश होकर न लौटना पड़े। उसका भी घर-परिवार चलता रहे। वो मुझे दुआएं दे। सोने का क्या है, वो तो पैसे की तरह हाथ का मैल है। आज है, कल नहीं। बल्कि मैं तो कहता हूं, देश के हर नागरिक को चोरों का ख्याल रखना चाहिए। ज्यादा नहीं तो महीने में दो चोरियां तो अपने घर में करवा ही लेनी चाहिए। बड़े-बुजुर्ग भी कह गए हैं, धन बांटने से बढ़ता है।

सही बोल रहा हूं, सोने का चोरी चला जाना पुण्य का काम है। इससे घर में बरकत बनी रहती है। सोने का महंगा होना चोरों के पेट पर लात है।

मुझे आम आदमी की सोने के पीछे दीवानगी कभी समझ नहीं आई। जिसे देखो वो सोना जोड़ने में लगा पड़ा है। कोई शौक के लिए जोड़ रहा है तो कोई शादी के लिए जोड़ रहा है तो कोई आड़े वक्त के लिए जोड़ रहा है। अमां, क्या कीजिएगा इतना सोना जोड़कर। जबकि साथ कुछ नहीं ले जाना है फिर भी...। यही सोना जब चोरी चला जाता है तब रोते हैं। चोरों को बद्दुआएं देते हैं। थाने में रपट लिखवाते हैं। बेवजह पुलिस वालों को भी परेशान करते हैं। मैं तो फिलहाल इस प्रतीक्षा में हूं कि सोना जल्द थोड़ा और नीचे आ जाए और चोरों का कारोबार फिर से चल निकले। मुझे यह कतई अच्छा नहीं लगता कि हम खाएं और चोर बेचारे हमारा मुंह ताकें। उनका दाना-पानी भी चलता रहे तो क्या हर्ज है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

सर्जना और व्याख्या

वरिष्ठ लेखक-पत्रकार अवधेश श्रीवास्तव साहित्य के गंभीर पाठक-विवेचक भी हैं। लंबे समय से वे विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए पुस्तक समीक्षाएं लिखते रहे हैं। हाल में उनकी लिखी समीक्षाओं का संकलन 'सर्जना और व्याख्या' पुस्तकाकार में आया है। इसमें उनके द्वारा लिखी गई तीस पुस्तकों की समीक्षाएं संकलित हैं। अवधेश श्रीवास्तव पुस्तकों का मूल्यांकन पूरी गंभीरता से करते हैं। वे अगर किसी किताब की विशिष्टताओं को रेखांकित करते हैं तो उसकी खामियों पर भी अंगुली रखने से परहेज नहीं करते हैं। यहां विष्णु प्रभाकर, भगवती चरण वर्मा, असगर वजाहत, अलका सरावगी, गोविंद मिश्र, शिवमूर्ति, राम दरश मिश्र, ओम निश्चल आदि की पुस्तकों के अलावा अर्नेस्ट हेमिंग्वे के अनूदित उपन्यास 'शस्त्र विदाई' की समीक्षा भी पढ़ी जा सकती है। *

पुस्तक: सर्जना और व्याख्या (समीक्षात्मक लेख)
लेखक: अवधेश श्रीवास्तव, मूल्य: 250 रुपए,
प्रकाशक: शांभवी प्रकाशन, गाजियाबाद

महादेव शिव की दिव्य-भव्य प्रतिमाएं

आस्था / शिखर चंद जैन

महादेव शिव को समर्पित सावन के विशेष महीने में भक्तगण भगवान शिव से जुड़े तीर्थ-स्थलों की यात्रा करते हैं। इस अवसर पर हम आपको अपने देश के विभिन्न स्थानों में स्थित भगवान शिव की कुछ दिव्य और भव्य प्रतिमाओं के बारे में बता रहे हैं। इनके दर्शन मात्र से विलक्षण शांति प्राप्त होती है।

मुरुदेश्वर महादेव कर्नाटक

कर्नाटक के उत्तरी हिस्से के भटकल तहसील में स्थित है मुरुदेश्वर महादेव मंदिर। 'मुरुदेश्वर' भगवान शिव का ही एक नाम है। यहां महादेव की जो मूर्ति स्थापित की गई है, वह देश-दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी शिव प्रतिमा है। यह प्रतिमा 123 फीट ऊंची है। इसे बनाने में 2 साल का वक्त लगा। मुरुदेश्वर मंदिर अरब सागर के तट पर स्थित है। यह तीन ओर से अरब सागर से घिरा हुआ है। यह स्थल मंगलौर से 165 किलोमीटर दूर स्थित है। यहां साल भर भक्तों और पर्यटकों का आगमन होता रहता है। *

आदियोगी शिव, कोयंबटूर

भगवान शिव के मुख की दुनिया में सबसे बड़ी प्रतिमा है आदियोगी शिव प्रतिमा। कोयंबटूर से करीब 30 किलोमीटर दूर स्थित यह शिव प्रतिमा 112 फीट ऊंची है। इसका वजन 500 टन है। इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज किया गया है। इस प्रतिमा को बनाने में सीमेंट, कंक्रीट, बालू आदि किसी भी वस्तु का इस्तेमाल नहीं किया गया है बल्कि इसे धातु के टुकड़ों से बनाया गया है। इसके निर्माण में ढाई साल लगे। इस मंदिर के निर्माण से संबद्ध संस्था ईशा फाउंडेशन के अनुसार आदियोगी शिव का यह चेहरा मुक्ति का प्रतीक है। यह शिव प्रतिमा योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाई गई है। *

सर्वेश्वर महादेव, वडोदरा

गुजरात के वडोदरा शहर के मध्य में स्थित है सूरसागर झील और इस झील के बीचों-बीच विराजमान हैं सर्वेश्वर महादेव। 78 फीट गहरे 23 खंभों पर टिकी सर्वेश्वर महादेव की यह मूर्ति 120 फीट ऊंची है। इसके निर्माण में 6 वर्ष लगे थे। यह स्थान अहमदाबाद से 112 किलोमीटर दूर है। शिव भक्तों के लिए यह मंदिर आस्था का केंद्र तो है ही, अन्य धर्मावलंबियों एवं पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है। इस मंदिर के आस-पास भी बहुत कुछ दर्शनीय है। *

सिद्धेश्वर महादेव, सिक्किम

सिक्किम के सोलोफोक पहाड़ी पर सिद्धेश्वर महादेव यानी भगवान शिव की बैठी हुई मुद्रा में लगभग 87 फीट ऊंची प्रतिमा विराजमान है। आधार से इसकी ऊंचाई 108 फीट है। सिक्किम के लोग इसे नामची महादेव और भगवान किरतेश्वर के नाम से भी पूजते हैं। सफेद रंग की यह मूर्ति आस्थावान शिव भक्तों के साथ-साथ पर्यटकों को भी आकृष्ट करती है। यहां भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों के साथ-साथ चार धामों- बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारका और रामेश्वरम की प्रतिकृतियां भी स्थापित हैं। *

हर की पैड़ी के शिव, हरिद्वार

हरिद्वार में हर की पैड़ी मंदिर बेहद लोकप्रिय श्रद्धा का केंद्र है। इसके ठीक सामने मौजूद है स्वामी विवेकानंद पार्क जहां भगवान शिव की 100 फीट ऊंची प्रतिमा विराजमान है। यहां देर शाम तक ठहर कर आप महादेव शिव के दर्शन के साथ-साथ गंगा आरती का भव्य नजारा भी देख सकते हैं। *

बेंगलुरु शिवोहम शिव मंदिर

ये शिव प्रतिमाएं भी हैं भव्य

यहां वर्णित भगवान शिव की विशाल एवं दिव्य प्रतिमाओं के साथ-साथ देश में कई अन्य स्थानों पर भी शिव के विशाल स्वरूप के दर्शन होते हैं।

- जबलपुर (मध्य प्रदेश) के कछार शहर में 76 फीट लंबी शिव प्रतिमा मौजूद है। इसके चारों तरफ 12 ज्योतिर्लिंग भी विराजित किए गए हैं।
- बेंगलुरु में शिवोहम शिव मंदिर में मौजूद शिव प्रतिमा 65.6 फीट ऊंची है। यहां पृष्ठभूमि में हिमालय की प्रतिकृति बनाई गई है।
- गुजरात के द्वारका में मौजूद है नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर। यहां विराजित शिव प्रतिमा 82 फीट ऊंची है।

गुजरात नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर

सेल्फ इंप्रूवमेंट / जोगिंदर रोहिल्ला

सफलता के लिए सीखनी होगी समय प्रबंधन की कला

समय की कद्र करना ही सफलता की पहली सीढ़ी है। पैसा, शोहरत, संबंध, सब कुछ दोबारा पाया जा सकता है, लेकिन एक बार गया हुआ समय फिर नहीं आता। इसलिए अगर सफल होना चाहते हैं, तो समय प्रबंधन की कला सीखनी ही होगी।

भारत के प्रसिद्ध महान आचार्य चाणक्य ने कहा था, 'पैसा दोबारा कमाया जा सकता है, लेकिन गया हुआ समय कभी वापस नहीं आता।'

सच है, हम सभी के पास दिन में 24 घंटे होते हैं। किसी के पास न ज्यादा, न कम। इसके बावजूद कुछ लोग हर दिन नई ऊंचाइयों को छूते हैं, जबकि बहुत सारे लोग समय की कमी की शिकायत करते रहते हैं। इसका कारण सीधा और सपष्ट है- सफल लोग समय को सिर्फ बिताते नहीं, वे अच्छे से समय को मैनेज करते हैं। हालांकि आज की तेज रफ्तार जिंदगी में लोग सबसे ज्यादा जिस चीज की कमी महसूस करते हैं, वह है- समय। घर-ऑफिस का वर्क प्रेशर, सोशल मीडिया, परिवार की जिम्मेदारियों में उलझकर लोग यही कहते हैं, क्या करें समय ही नहीं मिलता। पर सच यह है कि समय मिलता नहीं, समय मैनेज करना होता है। इसीलिए ब्रायन ट्रेसी ने कहा है, 'जो लोग अपने समय को नियंत्रित नहीं करते, वे अपने जीवन को नियंत्रित नहीं कर सकते।'

सक्सेसफुल टेनिस खिलाड़ी रोजर फेडरर के सफल बनने के पीछे केवल उनकी प्रतिभा ही नहीं, बल्कि उनका अनुशासित समय प्रबंधन भी था। उन्होंने अपनी ट्रेनिंग, रिकवरी और निजी जीवन-तीनों को संतुलन के साथ समयबद्ध किया, जिससे उनका प्रदर्शन लगातार ऊंचाइयों पर बना रहा।

समय प्रबंधन क्यों है जरूरी: हमें समझना होगा कि समय सीमित है। औसतन इंसान के पास सिर्फ 4000 हफ्ते होते हैं। घर-बाहर के काम कभी खत्म नहीं होते, इसलिए यह तय करना जरूरी है कि किस काम को पहले करना है और किसे बाद में?

आपको समझना होगा कि संतुलित जीवन में करियर, स्वास्थ्य, रिश्ते, खुशी सभी के लिए समय चाहिए होता है। जब हर चीज की प्लानिंग होती है तो इससे तनाव कम होता है, मन शांत रहता है।

समय प्रबंधन के तरीके: समय प्रबंधन करना बहुत कठिन नहीं होता है, इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना होता है।

प्राथमिकता तय करें: जो काम जरूरी है, वही पहले करें। अर्जेंट और इंपॉर्टेंट का अंतर समझें। इसी तरह यह भी बहुत जरूरी है कि अनावश्यक कामों को मना करना सीखें। ऐसे काम करने में अपना टाइम वेस्ट ना करें।

प्लानिंग करें: काम शुरू करने के पहले से ही आपका हर महीना, हफ्ता और हर दिन प्लान होना चाहिए। अगर ये बहुत ज्यादा लगता है तो हर हफ्ते और हर दिन की प्लानिंग से शुरू कीजिए। अपने कार्यों को एक निश्चित समय और क्रम में इस तरह से प्लान कीजिए कि हर जरूरी काम समय पर, सही ध्यान और ऊर्जा के साथ पूरा किया जा सके। याद रखिए कि आपको प्लानिंग में जिंदगी के हर पहलू का ध्यान रखना है। जैसे- करियर, हेल्थ, परिवार, हॉबी।

इवेल्यूएशन करें: हर वीक के अंत में अपना इवेल्यूएशन खुद करें। स्वयं से पूछें कि इस हफ्ते मेरी उपलब्धियां कैसी रहीं? क्या मैं अपने समय का सदुपयोग कर पाया? क्या इसमें और सुधार की जरूरत है? इन सब प्रश्नों के उत्तर आपको हर हफ्ते अपने टाइम मैनेजमेंट को इंप्रूव करने में मदद करेंगे।

ना करें टाइम वेस्ट: आज के समय में सोशल मीडिया लोगों का समय वेस्ट करने वाला सबसे बड़ा जरिया बन गया है। हम अनजाने में दिन के कई घंटे इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यू ट्यूब या फेसबुक पर बिता देते हैं। जरूरी है कि हम इन चीजों के इस्तेमाल पर नियंत्रण रखें। आप खुद तय कर सकते हैं कि दिन में कितना समय इनको देना है। यह समझना जरूरी है कि हर काम के लिए 'हां' कहना जिम्मेदारी नहीं, कमजोरी बन सकता है। जब जरूरत हो, तो 'ना' कहना सीखें, ताकि आप अपने समय और ऊर्जा को सही दिशा में लगा सकें। *

यादें

अशोक वाधवाणी

हिंदी सिनेमा के आरंभिक दौर से ही रोमांटिक दृश्यों को प्रभावी बनाने के लिए सावन और बारिश के माहौल का इस्तेमाल किया जाता रहा है। ऐसे ही एक यादगार गीत 'रिमझिम गिरे सावन' से कुछ दिलचस्प बातें जुड़ी हुई हैं।

कुछ इस तरह फिल्माया गया था पॉपुलर गाना रिमझिम गिरे सावन...

सावन और बरसात का हिंदी फिल्मों से पुराना कनेक्शन रहा है। बीते दौर की ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों से लेकर आज तक हिंदी फिल्मों में बरसात में भीगते हुए नायक-नायिका पर रोमांटिक गाने फिल्माने की परंपरा चल रही है। इस तरह के प्रयोग अकसर ही फिल्म और गाने को हिट कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बारिश में फिल्माए गए कई गाने इतने लोकप्रिय हुए हैं कि आज भी बारिश के मौसम में भीगने पर आम लोगों को भी उनकी पंक्तियां याद आ ही जाती हैं। ऐसे ही यादगार गानों की कड़ी में शामिल है वर्ष 1979 में रिलीज हुई फिल्म 'मंजिल' के का वो सुपरहिट गीत 'रिमझिम गिरे सावन...', जिसे फिल्माया गया था अमिताभ बच्चन और मौसमी चटर्जी पर। देखा जाए तो इस गाने की लोकप्रियता में बरसात ने उत्प्रेरक का काम किया। बासु चटर्जी के निर्देशन में बनी फिल्म 'मंजिल' मृणाल सेन द्वारा निर्देशित बांग्ला फिल्म 'आकाश कुसुम' (1965) का रीमेक है। इस फिल्म की कहानी को दर्शकों, समीक्षकों की समान रूप से सराहना मिली थी।

बैकग्राउंड में बजता है गाना: फिल्म 'मंजिल' के इस लोकप्रिय-कर्णप्रिय गीत 'रिमझिन गिरे सावन, सुलग-सुलग जाए मन...' को लिखा था योगेश ने और इसका सुरीला संगीत दिया था आर.डी. बर्मन ने। दिलचस्प बात यह है कि इस गाने को लता मंगेशकर और किशोर कुमार ने आवाज दी है, तो भी यह युगल गीत नहीं है। ये गाना अमिताभ बच्चन और मौसमी चटर्जी पर बारिश में भीगते हुए फिल्माया गया है। लेकिन पर्दे पर इन दोनों कलाकारों को यह गाना गाते हुए नहीं

दिखाया गया है। पूरे सीक्वेंस के दौरान केवल बैकग्राउंड में बजता रहता है- रिमझिम गिरे सावन...।

असली बारिश में फिल्माया गया: इस लोकप्रिय गीत के साथ एक दिलचस्प बात यह भी जुड़ी है कि इसको मुंबई की असली बारिश में अलग-अलग लोकेशंस पर तीन दिनों तक पिक्चराइज किया गया था। मुंबई के मरीन ड्राइव, गिरगांव चौपाटी, फोर्ट, गेट वे ऑफ इंडिया, ओवल मैदान, हुतात्मा चौक आदि दक्षिण मुंबई के दर्शनीय स्थानों पर इसे शूट किया गया। अमिताभ और मौसमी ने भी इस गाने में स्वाभाविकता लाने की कोशिश की, जिसमें दोनों सफल भी हुए। सूट, टाई पहने अमिताभ और सीधी-सादी साड़ी पहने मौसमी बिना छाते के बारिश में भीगते, अठखेलियां करते हुए टहलते दिखते हैं। बारिश से बचने के लिए इनके पास कोई छाता या रेन कोट नहीं होता है। वहीं हाथों में छाता थामे हुए लोगों का हुजूम, इन्हें भीगते हुए देखता है।

गाने का हर दृश्य है कमाल: इस गाने में बेहद सादगीपूर्ण ढंग से बारिश की मस्ती और प्रेम की भावना को दर्शाया गया है। हाथों में हाथ डाले प्रेमियों की भांति अमिताभ-मौसमी का भीगना बहुत अच्छा लगता है। समंदर किनारे बनी दीवार पर अमिताभ का हाथ पकड़े हुए मौसमी का चलना-फिरना, अमिताभ का दोनों हाथों से पकड़ कर मौसमी को नीचे उतारना, चेहरे पर जमी बारिश की बूंदों को मौसमी द्वारा अपनी साड़ी के पल्लू से पोंछना, ये सारे दृश्य सुंदर, स्वाभाविक और कमाल बन पड़े हैं।

पूरे गाने में दोनों कलाकारों का उत्साह देखते ही बनता है। बालमन जिस तरह बिंदासपन के साथ बारिश में उछलता-कूदता है, बिल्कुल वही उमंग, उत्साह, उल्लास, ऊर्जा दिखती है दोनों में। गोथिक शैली की ब्रिटिशकालीन बड़ी-बड़ी इमारतों के सामने, नारियल के पेड़ों के पास खुले मैदान के गड्ढों में भरे पानी को पूरे जोश-जुनून के साथ पैरों से छपाक मारना, अमिताभ-मौसमी का मासूम अल्हड़पन, ...गाने का एक-एक फ्रेम, एक-एक दृश्य बेहद खूबसूरत बन पड़ा है। *

आकाशवाणी सार्वजनिक क्षेत्र की रेडियो प्रसारण सेवा है, जो लगभग एक सदी से ज्ञान, सूचना और मनोरंजन का साधन बना हुआ है। आगामी 23 जुलाई को आकाशवाणी के स्थापना दिवस पर इसकी अब तक की यात्रा पर एक नजर।

अतीत से अब तक बरकरार आकाशवाणी की महत्ता

जानकारी

पूनम पांडे

आज आभासी दुनिया और तकनीक से सब कुछ जान लेने वाली पीढ़ी को अगर साढ़े चार दशक पहले के भारत की यह खास बात बताई जाए कि आकाशवाणी जीवन का एक अटूट हिस्सा हुआ करता था तो शायद वो एकदम से यकीन न करे। पर यही तब के समय का सच था।

आकाशवाणी की शुरुआत

आकाशवाणी की स्थापना 23 जुलाई 1927 को की गई थी। उस समय इस सेवा का नाम भारतीय प्रसारण सेवा (इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन) रखा गया था। तब देश में रेडियो प्रसारण की शुरुआत मुंबई और कोलकाता में दो निजी ट्रांसमीटरों से की गई थी। 1930 में इसका राष्ट्रीयकरण हुआ। 1936 में इसका नाम ऑल इंडिया रेडियो रखा गया और 1957 में इसे आकाशवाणी नाम दिया गया।

जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका

उस दौर में भारत में साक्षरता दर बहुत कम थी। वे दुनिया की दौड़ में बहुत पीछे थे। आकाशवाणी के माध्यम से बड़े ही सरल ढंग से आम बोल-चाल की भाषा में विभिन्न प्रकार की जानकारियां आम लोगों तक उपलब्ध कराई जाती थी। दूर-दराज के ग्रामीण इलाके में लोगों से जुड़कर और उनको जागरूक करने में रेडियो पर प्रसारित होने वाले आकाशवाणी के कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। भारत के राष्ट्रीय प्रसारक के रूप में, ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) यानी आकाशवाणी आज भी जनता को मनोरंजन, सूचना एवं ज्ञानपरक सेवाएं दे रहा है। आकाशवाणी शुरुआत से ही अपने आदर्श वाक्य 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का अनुसरण कर रहा है।

आकाशवाणी का व्यापक नेटवर्क

अपनी स्थापना के बाद से धीरे-धीरे आकाशवाणी के नेटवर्क का विस्तार होता गया। आज आकाशवाणी का तेइस भाषाओं और एक सौ छियालीस बोलियों में प्रसारण होता है। आकाशवाणी का व्यापक नेटवर्क देश की लगभग पूरी आबादी एवं क्षेत्र को कवर करता है।

हर तरह का मनोरंजन

आकाशवाणी समस्त भाषायी प्रदेशों की जनता के लिए गीत-संगीत, नाटक, गोष्ठियां, वार्ताएं, रूपकों, संस्मरणों आदि मनोरंजक कार्यक्रमों का प्रसारण करता है। इसके अलावा आकाशवाणी की विविध भारती सेवा फिल्मी गीतों को समर्पित होती है। आकाशवाणी पर समस्त कार्यक्रमों का लगभग पचास प्रतिशत समय मनोरंजन परक कार्यक्रमों के लिए होता है।

सूचना, शिक्षा एवं ज्ञान भी

आकाशवाणी पर हर एक घंटे पर मुख्य समाचार प्रसारित किए जाते हैं। इसके अलावा प्रातःकाल और सायंकाल में 15 मिनट की अवधि का समाचार बुलेटिन प्रसारित होता है। यह समाचार बुलेटिन हिंदी और अंग्रेजी भाषा में प्रसारित किया जाता है। बुलेटिन को इस तरह से तैयार किया जाता है कि श्रोता को उसे समझने के लिए किसी भी शब्दकोश का सहारा न लेना पड़े। आकाशवाणी पर श्रोताओं के विभिन्न समस्याओं को लेकर वार्ताएं भी प्रस्तुत की जाती हैं। अनुसंधानों के परिणामों, अभिभाषणों की कार्यवाही को लिपिबद्ध करके प्रस्तुत किया जाता है। इसके अंतर्गत कृषि, विज्ञान संबंधी शिक्षा देना भी शामिल होता है। आकाशवाणी के माध्यम से स्कूल तथा कॉलेज की कक्षाओं के लिए रेडियो द्वारा पाठ्य विषयों पर चर्चाएं भी प्रसारित की जाती हैं।

कायम है प्रासंगिकता

देखा जाए तो आज भी रेडियो और आकाशवाणी जनसंचार का सशक्त माध्यम बना हुआ है। इसने गांव-गांव तक ज्ञान की चेतना को पहुंचाने का अविस्मरणीय कार्य किया है। हालांकि आज संचार के विविध माध्यम, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और हर हाथ में मोबाइल की पहुंच ने रेडियो और आकाशवाणी के अस्तित्व को चुनौती अवश्य दी है, लेकिन इसकी कुछ अनूठी विशेषताओं के कारण आज भी इसकी लोकप्रियता, उपयोगिता एवं प्रासंगिकता बनी हुई है। *

खान-पान

चेतना झा

बारिश का मौसम और पकौड़े का कनेक्शन तो आप जानते ही हैं! लेकिन यहां हम आपको देश के अलग-अलग हिस्सों में खाए जाने वाले कुछ जायकेदार मानसूनी व्यंजनों के बारे में बता रहे हैं, जिनका स्वाद आप कभी भुला नहीं पाएंगे।

जायकेदार मानसूनी व्यंजनों का स्वाद

लाजवाब राजस्थानी दाल-बाटी-चूरमा: राजस्थान की धरती पर बारिश की बूंदें स्वाद की नई बयार भी लेकर आती हैं। बारिश हुई नहीं कि गोठ के प्रोग्राम बनने लगते हैं। गोठ यानी, प्रकृति के करीब या पार्कों में जाकर सामूहिक पिकनिक मनाना। अपनों के साथ खुले सुखद परिवेश में दाल-बाटी चूरमे का रसास्वादन सबसे ज्यादा चलन में है। सावन के महीने में तीज और राखी जैसे पर्व पर यहां की फिजा में घेवर की खुशबू भी घुल-मिल जाती है। घेवर में स्वाद की इतनी विविधता मिलती है कि आप चखते जाएंगे पर इसका अंत नहीं होगा। मेवाड़ क्षेत्र में घूमिए तो

दाल-बाटी-चूरमा

गली-गली से उठती पकौड़े, मालपूए की सुगंध भूख बढ़ा देती है। इसके साथ ही भुट्टे की सब्जी के साथ घी चुपड़ी रोटी का स्वाद कभी नहीं भुला पाएंगे।

यूपी में अंगीठी वाली मीठी रोटी: अब बात यूपी की अंगीठी वाली मीठी रोटी, अरबी के पत्ते के पकौड़े, अगस्त्य के फूल के पकौड़े की। भिगोकर पीसी गई उड़द और चने की दाल को हरी मिर्च, धनिया, अदरक डाल कर भून देते हैं, फिर धो-सुखा कर, अरबी के पत्तों पर इन्हें लपेट कर स्टीम देते हैं। इसके बाद बनती है इनकी पकौड़ी। लंबी प्रक्रिया है लेकिन बरसात आते ही घर-घर में इसे बनाया और चाव से खाया जाता है।

झारखंड में धुसका-बर्रा: 'धुसका बर्रा खाएंगे, झारखंड में बस जाएंगे...' इस गाने की पंक्तियों की तरह ही हिट है झारखंड का धुसका-बर्रा। सच है, बारिश के दिनों में झारखंड की हरी-भरी धरती पर धुसका खाने के बाद किसी का भी दिल यहां बस जाने को करेगा। बराबर की मात्रा में चना दाल और अरवा चावल को भिगोकर उसमें जीरा, मिर्च आदि मसाले मिलाकर पीसा जाता है फिर तुरंत ही तल कर बनाते हैं धुसका। आलू की खट्टी-मीठी सब्जी के साथ इसका लुत्फ उठाया जाता है। इनके अलावा यहां रूगड़ा भी इस मौसम में खूब

अगस्त्य के फूल के पकौड़े

धुसका-बर्रा

चाव से खाया जाता है। इसे 'शाकाहारी मटन' भी कहा जाता है।

एमपी में दाल-बाफला: पश्चिमी मध्य प्रदेश का एक बड़ा हिस्सा है मालवा। यहां बारिश की बूंदें दाल-बाफला का संदेश लेकर आती हैं। बाफला यानी आटे की बाटी को कंडे की आग में पका कर तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़े। पकाने के बाद इन बड़ों से राख झाड़ कर घी की कटोरी में डुबो देते हैं, फिर खट्टी-मिठ्ठी दाल के साथ इसका स्वाद लिया जाता है। *

बिहार की कचरी-मूरही और लिट्टी-चोखा

बिहार में बारिश होते ही लिट्टी और बैंगन के चोखे के अलावा कचरी-मूरही की तलब जगने लगती है। कचरी यानी लच्छे में कटे प्याज में कटी हरी मिर्च, लहसुन, अदरक, बैंगन, फूलगोभी और मसाले डाल कर बेसन के घोल में लपेट कर तैयार पकौड़े। मूरही यानी पफ्ड राइस या मुरमुरे। बारिश में गरमा-गरम कचरी के साथ मूरही का स्वाद भुलाया नहीं जा सकता है।

लिट्टी के लिए चने के सत्तू में बारीक कटी हरी मिर्च, धनिया पत्ती, अदरक, लहसुन, नीबू का रस, अजवाइन, कलौंजी, नमक और कुछ बूंदें सरसों के तेल डाल कर मिश्रण तैयार किया जाता है। गूंथे आटे की गोली में यह मिश्रण डाल कर गोइठे या कोयले की आग में पकाया जाता है। फिर इसी आंच पर बैंगन को भून कर चोखा तैयार किया जाता है। इसका स्वाद एक बार अगर जुबान पर चढ़ गया तो यकीन मानिए, इसे बार-बार खाने का जी करेगा।